वर्ष 2020-21 तृतीय अंक

कंडला नराकास

संवाहिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कंडला/गांधीधाम

: संयोजक :

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

गांधीधाम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की ऑनलाइन छमाही समीक्षा बैठक (दि. 29-01-2021)

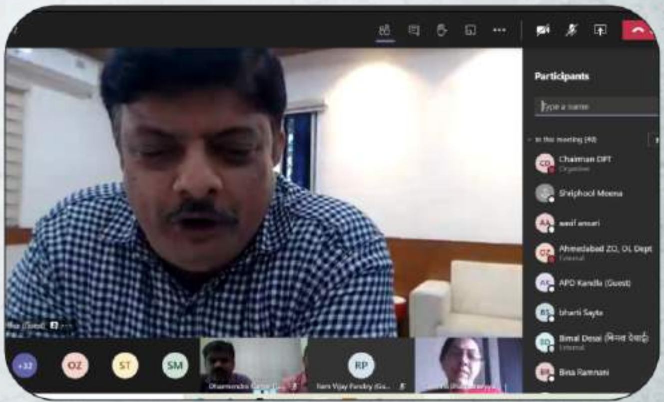

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री संजय कुमार मेहता, भा.व.से.
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम एवं अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

उप संरक्षक

श्री नंदीश शुक्ल, आईआरटीएस
उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

मार्गदर्शक मंडल

श्री टी.वी. रवि, आयुक्त सीमा शुल्क, कंडला
श्री संजय कुमार, भा.रा.से., संयुक्त आयकर आयुक्त, गांधीधाम
श्री आर. एम. पटेल, उप महानिदेशक, दीपस्तंभ और दीपपोत (वीटीएस) निदेशालय, गांधीधाम
श्री ज्ञानचंद जैन, अपर आयुक्त, सीमाशुल्क, कंडला
श्री आदिश पठानिया, आई.आर.टी.एस., क्षेत्रीय प्रबंधक, पश्चिम रेलवे, गांधीधाम
श्री संतोषकुमार एस. दारोकर, प्रधान अधिकारी, समुद्री वाणिज्य विभाग
श्री संजीव मेंघल, विमानपत्तन निदेशक, कंडला विमानक्षेत्र
श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
श्री के.बी. सुब्रमण्यम, महाप्रबंधक, पॉवरग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि., भचाऊ
श्री बिमल देसाई, उप महाप्रबंधक, गेल (इंडिया) लिमिटेड, सामाख्याली
श्री शहनाज नसीर, मुख्य टर्मिनल प्रबंधक, इंडियन ऑयल कॉ. लि., कंडला
श्री अनंतराव गुंटूरी, मुख्य संस्थापन प्रबंधक, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉ. लि., कंडला
श्री श्रीफूल मीना, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय इफको, गांधीधाम

संपादक

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय, सदस्य-सचिव, नराकास, कंडला/गांधीधाम
एवं हिंदी अधिकारी, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

उप संपादक मंडल

श्री विजय पावसे, प्रबंधक(मा.सं.), गेल (इंडिया) लिमिटेड, सामाखियाली/कंडला
श्री पंकज कुमार कुमावत, प्रबंधक (सुरक्षा), हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉ. लि., कंडला
श्री नरेश कुमार, सहायक कार्यकारी अभियंता, वीटीएस निदेशालय, गांधीधाम
श्री जय छाललिया, अभियंता, पॉवरग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि., भचाऊ
श्री शुभम कुमार, अधिकारी, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कंडला
श्री शिवानंद मिश्रा, पुस्तकालयाध्यक्ष, केंद्रीय विद्यालय इफको, गांधीधाम

सहायक संपादक मंडल

श्री राजेन्द्र पांडेय, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
सुश्री मोना पहलाजानी, हिंदी अनुवादक, कंडला विशेष आर्थिक क्षेत्र
श्री नरेश चंद्र पांडेय, हिंदी अनुवादक, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
श्री धर्मेन्द्र कुमार, हिंदी आशुलिपिक, समुद्री वाणिज्य विभाग
श्री नितिन देव जोशी, हिंदी आशुलिपिक, आयकर कार्यालय, गांधीधाम
श्री आसिफ अंसारी, हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय, रेलवे, गांधीधाम
श्री नरेश भंभानी, हिन्दी टंकक, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	शुभकामना संदेश	1-7
2.	संपादकीय	08
3.	नराकास की वर्तमान व्यवस्था – परिचय	09
4.	नराकास संबधी संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों पर जारी आदेश	10-11
5.	नराकास, कंडला/गांधीधाम के विद्यमान सदस्य कार्यालयों के नाम एवं पते	12-13
6.	लेख : आत्मनिर्भर भारत – श्रीमती मेरी विजयकुमार, डीपीटी	14
7.	कविता : बेटी – श्री कुन्दन कुमार, सीमाशुल्क आयुक्त का कार्यालय	19
8.	कविता : हमारे देश के डॉक्टर – श्रीमती ज्योति भावनानी, डीपीटी	19
9.	नराकास राजभाषा शील्ड पुरस्कार योजना–2019 – पुरस्कार वितरण	20-21
10.	दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता – पुरस्कार वितरण	22
11.	दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा आयोजित हिंदी संगोष्ठी	23
12.	संयुक्त प्रशिक्षण कार्यशाला – हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड	24
13.	कविता : फौजी दिल से सलाम – श्रीमती ज्योति भावनानी, डीपीटी	25
14.	यूको बैंक, गांधीधाम की उल्लेखनीय गतिविधियाँ	26
15.	कविता : नित्य नवीन संकल्प हमारा–श्री हितेश एच. बालिया, समुद्री वाणिज्यिक विभाग	26
16.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम	27
17.	कविता : एक मन अंदर एक मन बाहर – श्री धर्मेन्द्रकुमार, समुद्री वाणिज्य विभाग,	28
18.	कहानी : मुन्ना – श्रीमती रानी कुकसाल, डीपीटी	29
19.	कविता : कुदरत की करतूत – श्री सुगनलाल, केन्द्रीय विद्यालय रेलवे	31
20.	कविता : आत्म नियंत्रण – श्री सुगनलाल, केन्द्रीय विद्यालय रेलवे	31
21.	लेख : झांसी की रानी लक्ष्मीबाई– सुश्री राजेश्वरी, यूको बैंक	32
22.	कविता : मै और मेरे अल्फाज – श्री सुगनलाल, केन्द्रीय विद्यालय रेलवे	34
23.	लेख : सूर्य नमस्कार – सुश्री राजेश्वरी, यूको बैंक	35
24.	कविता : माँ – श्री हनुमान वर्मा, केन्द्रीय विद्यालय रेलवे	35
25.	लेख : वैशाली की नगरवधू – श्री शिवानंद मिश्र, केन्द्रीय विद्यालय इफको	36
26.	कविता : एक ऐसा सावन आता था – श्रीमती रानी कुकसाल, डीपीटी	37
27.	कविता : जिम्मेदारी – सुश्री दीक्षा राजपुरोहित, डीपीटी	38
28.	कविता : काश – सुश्री दीक्षा राजपुरोहित, डीपीटी	38

शुभकामना संदेश

कंडला/गांधीधाम प्रक्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करने, इसे बढ़ावा देने और इसके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के उद्देश्य से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम गठित है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की अध्यक्षता दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के पास है । इस नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति में कंडला/गांधीधाम स्थित केंद्र सरकार के सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक इत्यादि सदस्य के रूप में शामिल हैं । संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना केंद्र सरकार के हर एक कार्यालय/उपक्रम/बैंक इत्यादि का दायित्व है । मुझे लगता है कि नराकास एकमात्र ऐसा मंच है जहाँ केंद्र सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक इत्यादि सभी किसी विषय पर एक साथ बैठते हैं तथा चर्चा और समीक्षा करते हैं ।

राजभाषा नियम, 1976 के नियम-12 के तहत कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को सुनिश्चित कराने का उत्तरदायित्व कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का होता है । अत: नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम का अध्यक्ष होने के नाते नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों से मेरा आग्रह है कि नराकास के इस मंच का लाभ उठाते हुए और इसके महत्व को समझते हुए नराकास द्वारा आयोजित छमाही समीक्षा बैठकों में अवश्य भाग लें और बैठकों में लिए गए निर्णयों को अपने कार्यालय में क्रियान्वित कर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति सुनिश्चित करें । इन बैठकों में राजभाषा विभाग के अधिकारी भी भाग लेते हैं जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और समीक्षा हेतु सभी का मार्गदर्शन करते हैं ।

नराकास के स्तर पर की जाने वाली गतिविधियों में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण गतिविधि है । मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि नराकास, कंडला/गांधीधाम की वार्षिक पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' का तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । 'कंडला नराकास संवाहिका' के तृतीय अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । सभी सदस्य कार्यालयों से मेरा अनुरोध है कि पत्रिका के ससमय प्रकाशन को निरंतरता प्रदान करने के लिए अपने-अपने कार्यालयों की ओर से आपके कार्यालयों में की गई राजभाषा संबंधी गतिविधियों के साथ-साथ उपयोगी और रोचक लेखक/कहानी/कविताएं इत्यादि समय पर प्रेषित करना सुनिश्चित करें । राजभाषा हिंदी के प्रसार-प्रचार हेतु पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सर्वसंबंधितों के प्रयासों की सराहना करते हुए और उन्हें बधाई देते हुए पत्रिका के प्रकाशन के उद्देश्य की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-साथ विश्वव्यापी कोविड महामारी के दौरान ईश्वर से सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना है ।

संजय कुमार मेहता
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं
अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम)
केंद्रीय सदन, छठा तल, सी विंग, सीबीडी बेलापुर,
नवी मुंबई 400 614

शुभकामना संदेश

मुझे जानकर बहुत ही प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला–गांधीधाम की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । ''कंडला नराकास संवाहिका'' पत्रिका का यह अंक साहित्यिक रचनाओं, कार्यालयीन गतिविधियों, नए रचनात्मक कार्य को रेखांकित करते हुए प्रगति पथ पर नए–नए आयामों तथा अपने बहुमूल्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को दिन–प्रतिदिन गति प्रदान करते हुए चहुँमुखी विकास को पूर्णता प्रदान करेगा ।

भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी है । हमें हिंदी भाषा का प्रसार और उसका विकास करना होगा ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके । अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रुप, शैली को आत्मसात करते हुए हिंदी शब्दकोश का भंडार व्यापकता के विस्तारीकरण में अपनी निर्बाध गति को निरंतरता प्रदान करते हुए समृद्धता में अपना वर्चस्व स्थापित करे । आज हिंदी वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का माध्यम भी है ।

देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक, भौगोलिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी भाषा के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक प्रयास किए जाएं । हम संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार अपने दायित्व का निर्वहन ठीक प्रकार से करें । वास्तव में हमारी भाषाएं ही हमारी संस्कृति और सभ्यता का वाहक होती हैं । भारतीय संघ का उद्देश्य हिन्दी के विकास के साथ–साथ भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में बांधना है ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला–गांधीधाम की हिंदी पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' राजभाषा के प्रचार–प्रसार में सुदृढ़ सामंजस्य स्थापित करते हुए विश्व के कोने–कोने में हिंदी भाषा का परचम लहराएगी और हिंदी को भूमंडलीय स्थिरता प्रदान करेगी । पत्रिका के संपादक मंडल व अन्य सहयोगियों को पत्रिका के प्रकाशन की अनंत मंगल शुभकामनाएं व साधुवाद ।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

शुभकामना संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला–गांधीधाम की हिंदी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के तृतीय अंक के साथ पुन: आप सबके सम्मुख अपनी बात रखते हुऐ मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है ।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि इस देश की संवैधानिक व्यवस्था के तहत संघ सरकार की राजभाषा के रूप में हिंदी भाषा को अपनाया गया है । अत: केंद्र सरकार के कार्यालय या उपक्रम या बैंक आदि कार्यालयों में कार्य करने वाले हम सबकी जिम्मेदारी है कि न केवल अपने कार्यालय में राजभाषा हिंदी को अपने कार्यालयीन कार्यो में प्रयोग करें बल्कि राजभाषा होने के नाते हिंदी का प्रचार–प्रसार करने वाली गतिविधियों और क्रियाकलापों को भी बढ़ावा दें ताकि यथाशीघ्र भारत सरकार की राजभाषा नीति के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके । हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण गतिविधि है ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के मंच के माध्यम से अलग–अलग कार्यालय समिति के सदस्य के रूप में आपस में जुड़े होते हैं । इस स्तर पर हिंदी पत्रिका का प्रकाशन सभी सदस्य कार्यालयों को आपस में एक सूत्र में पिरोने का कार्य भी करती है ।

मैं पुन: नराकास की पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के तृतीय अंक के प्रकाशन की बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका सभी सदस्य कार्यालयों और उनमें कार्य करनेवाले कार्मिकों को अपनी जानकारी/सृजित साहित्य/विचार/उपलब्धियाँ इत्यादि साझा करने का मंच अनवरत प्रदान करती रहेगी और अपने प्रकाशन के उद्देश्य में सफल होगी । साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इस कोविड महामारी के संक्रमण काल में सभी के जीवन की सुरक्षा हो और सभी स्वस्थ बने रहें ।

नंदीश शुक्ल, आईआरटीएस
उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

शुभकामना संदेश

मेरे लिए यह अति प्रसन्नता की बात है कि 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' (नराकास) के द्वारा हिंदी वार्षिक पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

मैं उम्मीद करता हूँ कि ''कंडला नराकास संवाहिका'' का यह तृतीय अंक हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं विभाग के साहित्य से जुड़े लोगो में उत्साह, उमंग एवं नई स्फूर्ति पैदा करेगा ।

राजभाषा हिन्दी को कार्यालय के काम-काज में कार्यान्वित करना हमारा दायित्व ही नहीं अपितु एक संवैधानिक कर्तव्य भी है और गृह पत्रिका का प्रकाशन इस कर्तव्य के निर्वहन में एक सफल कदम है ।

मैं 'कंडला नराकास संवाहिका' के सम्पादन मण्डल से जुड़े लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ । यह पत्रिका अपनी यात्रा में बिना किसी रुकावट व अवरोध के आगे बढ़ती रहे, ऐसी मेरी कामना है ।

टी. वी. रवि
आयुक्त
सीमा शुल्क, कंडला

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बड़ा हर्ष हो रहा है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास)-कंडला/गांधीधाम द्वारा हिंदी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इससे न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायता मिलेगी बल्कि कंडला/गांधीधाम नगर प्रक्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में कार्यरत कार्मिकों को अपने विचार परस्पर साझा करने का एक मंच प्राप्त होगा । साथ ही राजभाषा के क्षेत्र में सभी सदस्य कार्यालयों की गतिविधियों के प्रदर्शन एवं आपसी समन्वय स्थापित करने का सुनहरा अवसर भी प्राप्त होगा ।

मैं आयकर कार्यालय, गांधीधाम की ओर से पत्रिका की सफलता हेतु पत्रिका के संपादक मण्डल एवं सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोगियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं ।

संजय कुमार
संयुक्त आयकर आयुक्त
गांधीधाम रेंज, गांधीधाम

पश्चिम रेलवे, क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय, गांधीधाम

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अधीन और दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की वार्षिक पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' का तीसरा अंक प्रकाशित होने जा रहा है । आशा है कि पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी यह पत्रिका विविध रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा प्रेमियों के लिए एक नई सौगात लेकर आएगी और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देगी । मेरी ओर से पत्रिका के संपादक मंडल और नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक शुभकामनाएं ।

आदिश पठानिया
आई.आर.टी.एस.
क्षेत्रीय प्रबंधक, पश्चिम रेलवे, गांधीधाम

भारत सरकार
पोत परिवहन मंत्रालय
समुद्री वाणिज्य विभाग

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि नराकास कंडला/गांधीधाम के स्तर पर वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस पत्रिका के माध्यम से नराकास की गतिविधियों एवं विभिन्न कार्मिको द्वारा की गई रचनाओं को पढ़ने का और उनकी लेखन कला की जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा । मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख सभी पाठकजन को प्रोत्साहित और उनका ज्ञानवर्धन करेंगे ।

मैं पत्रिका की सतत सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ ।

संतोषकुमार एस. दारोकर
प्रधान अधिकारी
समुद्री वाणिज्य विभाग, गांधीधाम - कंडला

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नराकास के स्तर पर हिन्दी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस पत्रिका के माध्यम से हमें विभिन्न विभागों के कार्मिकों की रचनाओं को पढ़ने और उनकी लेखन–कला के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा और राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों और प्रावधानों के साथ–साथ अन्य सदस्य कार्यालयों के बारे में भी जानकारी मिलेगी ।

मैं, पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

संजीव मेंघल
विमानपत्तन निदेशक
कंडला विमान क्षेत्र

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कंडला/गांधीधाम जिसकी अध्यक्षता दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के पास है, की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' का तृतीय अंक आप सभी के सहयोग और संपादक मंडल के सफल प्रयासों से आपके सम्मुख प्रस्तुत हो रहा है ।

नराकास की गतिविधियों जैसे छमाही समीक्षा बैठकों, संयुक्त कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं आदि के सफल आयोजन में सभी सदस्य कार्यालयों का योगदान महत्वपूर्ण होता है । मुझे आशा है कि उसी प्रकार नराकास स्तर पर एक अन्य महत्वपूर्ण गतिविधि अर्थात हिंदी पत्रिका के प्रकाशन में भी आप सभी का योगदान बढ़–चढ़ कर प्राप्त होगा । संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करना केंद्र सरकार के हर एक कार्यालय/उपक्रम/बैंक इत्यादि का दायित्व है । यह पत्रिका अपने इस उद्देश्य में सफल हो इसके लिए हम सभी को आगे बढ़कर अपना सहयोग देना परम आवश्यक है । इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने मौलिक सृजन–क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान–समझ सकते हैं ।

अंत में मैं पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का अभिनन्दन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ ।

सी. हरिचन्द्रन
सचिव, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

शुभकामना संदेश

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि नराकास–गांधीधाम कंडला द्वारा हिन्दी पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

नराकास–गांधीधाम कंडला के सदस्य सचिव, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट, कंडला के हिंदी अधिकारी श्री शैलेंद्र पाण्डेय के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि राजभाषा कार्यान्वयन की बैठकें नियमित तौर पर होती हैं, जिसमें उप निदेशक–कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, पश्चिम क्षेत्र की उपस्थिति भी रहती है ।

नराकास के तत्त्वावधान में, सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं और अंतर सदस्य–कार्यालय हिन्दी प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छी भागीदारी देखने को मिलती है ।

और अब नराकास–गांधीधाम कंडला द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन एक मजबूत कदम है जो सभी सदस्य कार्यालयों और उनके कर्मचारियों को स्वरचित काव्य अथवा लेखन के प्रकाशन का समुचित अवसर प्रदान करता है और सबको प्रोत्साहित भी करता है।

अनंतराव गुंटूरी
मुख्य इन्स्टॉलेशन प्रबंधक
हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉ. लि., कंडला टर्मिनल

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि तीसरे वर्ष भी ''नराकास कंडला संवाहिका'' पत्रिका का प्रकाशन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला, गांधीधाम द्वारा होने जा रहा है । इस सराहनीय प्रयास हेतु मैं व्यक्तिगत एवं केंद्रीय विद्यालय इफको गांधीधाम की ओर से अपनी शुभकामना संप्रेषित करता हूँ । इस कच्छ की भूमि पर नराकास कंडला द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं उन्नयन हेतु जो प्रयास किये जा रहे हैं, उन सभी से मैं अवगत हूँ तथा आपके प्रयासों की भूरि भूरि प्रशंसा करता हूँ ।

यह पत्रिका इसी प्रकार राजभाषा हिंदी के विविध आयामों को अपने अंक में समेटे हुए प्रति वर्ष समय पर प्रकाशित होती रहे ।

श्रीफूल मीना
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय इफको, गांधीधाम

संपादकीय

नराकास का सदस्य-सचिव होने के नाते अध्यक्ष, नराकास के संरक्षण में और सभी सदस्य कार्यालयों के सराहनीय सहयोग से नराकास की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' का तृतीय अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है । राजभाषा विभाग के मार्गनिर्देश के अनुपालन में इस तृतीय अंक को भी ई-पत्रिका के रुप में प्रकाशित किया जा रहा है । इसे आप दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की वेबसाइट (https://www.deendayalport.gov.in/Kandla-Narakas-Samvahika) और राजभाषा विभाग की वेबसाइट (http://164.100.160.134/epatrika/epatrika_lst.php#noback) पर जाकर पढ़ और डाउनलोड कर सकते हैं । तथापि यदि सदस्य कार्यालयों की अपेक्षा और मांग प्राप्त होती है तो सदस्य कार्यालयों को पत्रिका की मुद्रित प्रति भी उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा । कोविड-19 के प्रकोप के चलते नराकास की निर्धारित गतिविधियों जैसे संयुक्त कार्यशालाओं का आयोजन आदि को समय की मांग के अनुसार आगे ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कर राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने का प्रयास करते रहना होगा ।

यह एक सर्वविदित संवैधानिक तथ्य है कि केंद्र सरकार की राजभाषा अर्थात सरकारी कामकाज की भाषा 'हिंदी' है । संवैधानिक व्यवस्था के अनुरुप राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना केंद्र सरकार के हर एक कार्यालय/उपक्रम/बैंक इत्यादि का दायित्व है । इसी को ध्यान में रखते हुए सभी सदस्य कार्यालयों और सुधी पाठकों को जागरुक बनाए रखने के उद्देश्य से नराकास की वर्तमान व्यवस्था, नराकास संबंधी आदेश इत्यादि से संबंधित जानकारी पत्रिका के इस अंक में भी पुन: प्रस्तुत की गई है । नराकास की गतिविधियों जैसे छमाही समीक्षा बैठकों, संयुक्त कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों आदि के सफल आयोजन एवं पत्रिका के प्रकाशन आदि में सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय भागीदारी होना महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य है । मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि नराकास स्तर पर की जाने वाली सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों में सदस्य कार्यालयों का सहयोग और सक्रिय भागीदारी आगे भी बढ़-चढ़ कर प्राप्त होती रहेगी ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार नराकास संबंधी गतिविधियों से संबंधित सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान हेतु 'कंडला-नराकास' नाम से सदस्य-सचिव द्वारा एक व्हाट्सअप ग्रुप का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों, राजभाषा समन्वयकों आदि को जोड़ा गया है । तथापि सभी सदस्य कार्यालयों से पुन: अनुरोध है कि संबंधित सदस्य कार्यालयों में कार्यालय प्रमुखों और हिंदी समन्वयकों के स्थानांतरण/नियुक्ति आदि के कारण होने वाले किसी परिवर्तन की सूचना व्हाट्सअपग्रुप/ईमेल/डाक के माध्यम से सदस्य-सचिव कार्यालय को तत्काल दी जाए ताकि नराकास के सदस्य कार्यालयों की जानकारी को अद्यतन रखा जा सके, क्योंकि सदस्य कार्यालयों की अद्यतन जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर अपलोड करना अपेक्षित रहता है । नराकास, कंडला/गांधीधाम से संबंधित अद्यतन जानकारी राजभाषा विभाग द्वारा तैयार की गई नराकास की वेबसाइट narakas.rajbhasha.gov.in पर नराकास कार्यालय सं. 262 का चयन कर देखी जा सकती हैं ।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने नाम के अनुसार ही कंडला-नराकास के सदस्य कार्यालयों के बीच संवाद एवं विचारों की संवाहिका का कार्य अनवरत करती रहेगी । साथ ही न केवल सदस्य कार्यालयों में हो रही राजभाषा या अन्य विशिष्ट गतिविधियों के सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन बल्कि सदस्य कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की मौलिक सृजन क्षमता/विचारों को एक दूसरे से साझा करने में एक सेतु का कार्य भी करती रहेगी । पत्रिका का प्रकाशन नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों को राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रेरित और प्रोत्साहित करेगा । पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो इसके लिए हम सभी के लिए स्वत: आगे बढ़कर अपना सहयोग देना परम आवश्यक है ।

अंत में मैं पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन में अपना सहयोग देने वाले सभी सदस्य कार्यालयों, उनके कार्यालय प्रमुखों और सदस्य कार्यालयों के प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से जुड़े सहयोगी सभी कार्मिकों का अभिनन्दन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि अगले अंक के प्रकाशन में पुन: आप सभी का इससे भी अधिक सहयोग प्राप्त होगा । आप सभी के विचारों, प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की प्रतीक्षा में....

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय

सदस्य-सचिव, नराकास, कंडला/गांधीधाम एवं हिंदी अधिकारी, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

दूरभाष : 02836-221698 (का.) / 9320815312 ईमेल : hindiofficer@deendayalport.gov.in / hindikandlaport@gmail.com

परिचय

1. **नराकास का गठन :** राजभाषा विभाग के दिनांक 22.11.1976 के का.ज्ञा.सं. 1/14011/12/76-रा.भा.(का-1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा सकता है । समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के सचिव (राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है ।

2. **अध्यक्षता :** इन समितियों की अध्यक्षता नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रमों/बैंकों आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों में से किसी एक के द्वारा की जाती है । अध्यक्ष को राजभाषा विभाग द्वारा नामित किया जाता है । नामित किए जाने से पूर्व प्रस्तावित अध्यक्ष से समिति की अध्यक्षता के संबंध में लिखित सहमति प्राप्त की जाती है ।

3. **सदस्यता :** नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि अनिवार्य रूप से इस समिति के सदस्य होते हैं । उनके वरिष्ठतम अधिकारियों (प्रशासनिक प्रधानों) से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लें ।

4. **सदस्य-सचिव :** समिति के सचिवालय के संचालन के लिए समिति के अध्यक्ष द्वारा अपने कार्यालय से अथवा किसी सदस्य कार्यालय से एक हिंदी विशेषज्ञ को उसकी सहमति से समिति का सदस्य-सचिव मनोनीत किया जाता है । अध्यक्ष की अनुमति से समिति के कार्यकलाप सदस्य सचिव द्वारा किए जाते हैं ।

5. **बैठकें :** इन समितियों की वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं । प्रत्येक समिति की बैठकें आयोजित करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा एक कैलेंडर रखा जाता है जिसमें प्रत्येक समिति की बैठक हेतु एक निश्चित महीना निर्धारित किया जाता है । इन बैठकों के आयोजन संबंधी सूचना समिति के गठन के समय दी जाती है और निर्धारित महीनों में समिति को अपनी बैठकें करनी होती हैं । नराकास, कंडला/गांधीधाम की बैठकों के लिए जनवरी एवं अगस्त माह निर्धारित हैं ।

6. **प्रतिनिधित्व :** इन समितियों की बैठकों में नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के प्रशासनिक प्रधान भाग लेते हैं । राजभाषा विभाग (मुख्यालय) एवं इसके क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी भी इन बैठकों में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हैं । नगर स्थित केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की शाखाओं में से किसी एक प्रतिनिधि एवं हिंदी शिक्षण योजना के किसी एक अधिकारी को भी बैठक में आमंत्रित किया जाता है ।

7. **उद्देश्य :** केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सकें । फलत: नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया । इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संबंधी संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों पर जारी आदेश

नराकास विषय पर संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों पर पिछले खण्डों की संस्तुतियां और उन पर पारित आदेश निम्न प्रकार है :-

परिचय

संस्तुति सं.	संस्तुति	आदेश
छठे खण्ड की संस्तुति सं. 11.5.17	कई नगरों में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक है । अत: समिति का सुझाव है कि इन्हें विभाजित कर इनके सदस्यों की अधिकतम निर्धारित संख्या 40 रखी जाएं और तदनुसार दो या इससे अधिक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ गठित की जाएं ।	समिति की यह सिफारिश इन संशोधन के साथ स्वीकार कर ली गई है कि जिन समितियों की सदस्य संख्या 150 या इससे अधिक हो, उन्हें दो भागों में बांटा जाए । राजभाषा विभाग द्वारा इस आशय के निदेश जारी किए जाएं ।
सातवें खण्ड की संस्तुति सं. 16.5 (ज)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालय प्रधान को स्वयं उपस्थित होना चाहिए ।	यह संस्तुति स्वीकार कर ली गई है कि सभी मंत्रालयों/विभागों अपने संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, उपक्रमों और कार्यालयों के प्रमुखों, बैंकों आदि को निदेश दें कि वे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में स्वयं भाग लें ।
सातवें खण्ड की संस्तुति सं. 16.5 (झ)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैंठकों में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई को उच्च स्तर पर पूर्ण निष्ठा से निगरानी और समीक्षा की जानी चाहिए ।	यह संस्तुति स्वीकार कर ली गई है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख समिति के निर्णय पर कार्यवाही की निगरानी व समीक्षा सुनिश्चित करें ।
सातवें खण्ड की संस्तुति सं. 16.5 (ट)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें त्रैमासिक रूप से आयोजित की जाएं तथा वर्ष में आयोजित होने वाली चार बैठकों में से कम से कम दो बैठकों में कार्यालय के अध्यक्ष अनिवार्य रूप से स्वयं भाग लें और बैठकों में लिए गए निर्णयों का पूर्ण रूप से अपने कार्यालयों में अनुपालन कराएं ।	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में दो बैठकें अपेक्षित हैं । इन बैंठकों में कार्यालय अनिवार्य रूप से भाग लें । इस संबंध में राजभाषा विभाग समुचित निर्देश जारी करें ।
सातवें खण्ड की संस्तुति सं. 16.5 (ड)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में तीन बैठकें समिति के अध्यक्ष की अध्यक्षता में अलग-अलग कार्यालयों में आयोजित की जाएं तथा अंतिम बैठक समिति के अध्यक्ष के कार्यालय में ही आयोजित की जाएं और उसमें राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहें ताकि वर्ष भर की गतिविधियों और प्रगति की समीक्षा की जा सके और पाई गई कमियों को सभी संबंधितों के ध्यान में लाया जाए और उन्हें सामूहिक प्रयास से दूर कर लिया जाए ।	यह संस्तुति स्वीकार्य नहीं पाई गई है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें अलग-अलग स्थानों पर आयोजित करना, बैठक स्थान व अन्य संसाधनों की उपलब्धता की दृष्टि से व्यवहारिक नहीं है।

सातवें खण्ड की संस्तुति सं. 16.5 (ढ)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा समारोह/संगोष्ठी आयोजित की जानी चाहिए ताकि राजभाषा के प्रयोग के प्रति जागरुकता पैदा हो और अनुकूल वातावरण बने ।	यह संस्तुति स्वीकार कर ली गई है ।
आठवें खण्ड की संस्तुति सं. 16	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों के आयोजन में व्यय होने वाली राशि की सीमा रु. 3000/- से बढ़ाकर रु. 10000/- कर देना चाहिए अथवा सदस्य कार्यालयों द्वारा लिए जाने वाले योगदान को संहिताबद्ध (कोडिफाई) किया जाए ताकि सदस्य कार्यालयों को इस राशि की मंत्रालयों/मुख्यालयों से स्वीकृति आदि प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो ।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में होने वाले व्यय की सीमा समय-समय पर समीक्षा करके आवश्यकतानुसार संशोधित की जाए ।
आठवें खण्ड की संस्तुति सं. 17	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के प्रभावी संचालन हेतु नराकास सचिवालय को स्थाई तौर पर अतिरिक्त मानव संसाधन एवं अन्य आधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाया जाना चाहिए ।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां अपने सदस्य-कार्यालयों के सहयोग से उनके पास उपलब्ध आंतरिक संसाधनों से ही समितियों के प्रभावी संचालन हेतु आवश्यक सुविधाएं जुटाएं ।
आठवें खण्ड की संस्तुति सं. 18	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैंठकों में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई को उच्च स्तर पर पूर्ण निष्ठा से निगरानी और समीक्षा की जानी चाहिए ।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि इस प्रकार की बैठकें वार्षिक आधार पर क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित की जाएं।
आठवें खण्ड की संस्तुति सं. 20	नराकास की बैठकों में राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारी का प्रतिनिधित्व अनिवार्य किया जाए ।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि नराकास की बैठकों में राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों का प्रतिनिधित्व यथासंभव सुनिश्चित किया जाए ।
आठवें खण्ड की संस्तुति सं. 22	अध्यक्ष, नराकास, मंडी, अध्यक्ष, नराकास (बैंक), इंदौर, अध्यक्ष, नराकास, शिमला, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), चंदीगढ़, अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम), मुंबई, अध्यक्ष, नराकास(बैंक), बड़ौदा, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), त्रिवेंद्रम, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), कोचिन, अध्यक्ष, नराकास, मदुरै, अध्यक्ष, नराकास, कोयम्बतूर, अध्यक्ष, नराकास(बैंक), बेंगलोर (अध्याय 8 के पैरा 8.33.8.45 में) द्वारा दिए गए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्षों से प्राप्त सुझावों पर राजभाषा विभाग उचित कार्यवाही करें ।	सिफारिशों पर राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा इस संबंध में समय-समय पर जारी आदेशों के परिप्रेक्ष्य में यथासंभव अनुपालन किया जाए ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम (कोड सं. 262) के विद्यमान सदस्य कार्यालयों के नाम एवं पते

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
संयोजक कार्यालय, नराकास
प्रशासनिक कार्यालय भवन,
पो.बॉ.सं. 50, गांधीधाम
कच्छ-370 201

संयुक्त आयकर आयुक्त का कार्यालय
आयकर भवन,
आई.टी.ओ. वार्ड-1,
प्लाट नं. 20 ए, सेक्टर-8,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल
इकाई डीपीटी कंडला,
पोस्ट : नया कंडला
कच्छ - 370 210

गोदी सुरक्षा निरीक्षणालय
कंडला बंदर गेट के पास,
पोस्ट बॉक्स सं. 18,
नया कंडला - कच्छ 370 201

सहायक श्रम आयुक्त कार्यालय
स्टाफ क्लब, प्रथम तल,
गोपालपुरी पोर्ट कॉलोनी,
गांधीधाम, कच्छ - 370 240

समुद्री वाणिज्य विभाग,
पोत परिवहन मंत्रालय,
प्लॉट सं. 16, सेक्टर-8,
डीपीटी प्रशासनिक कार्यालय भवन
के पीछे, गांधीधाम, कच्छ 370 201

वीटीएस निदेशालय
दीप स्तंभ और दीपपोत महानिदेशालय
दीप भवन, प्लाट नं. 17,
सेक्टर-8, गांधीधाम
कच्छ - 370 201

मुख्य डाकघर गांधीधाम
सेक्टर-8, वार्ड-8,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड
कंडला इंस्टालेशन, खारी रोहर रोड,
पो.बॉ.नं. 33,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

सीमाशुल्क आयुक्त का कार्यालय
नवीन सीमा शुल्क भवन, नया कंडला,
कच्छ-370210

विमानपत्तन निदेशक कार्यालय
नागर विमानक्षेत्र कंडला
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
पोस्ट-गोपालपुरी, गांधीधाम,
कच्छ - 370 240

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड
कंडला मेन टर्मिनल,
खारी रोहर, पो.बॉ.नं. 37,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

नमक अधीक्षक का कार्यालय
गांधीधाम चैम्बर्स ऑफ़ कॉमर्स
एंड इंडस्ट्रीज बिल्डिंग,
प्लॉट नं. 71, सेक्टर-8, प्रथम तल,
गांधीधाम-कच्छ 370 201

क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय
पश्चिम रेलवे
नटराज होटल के पीछे, रेलवे कॉलोनी,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड
कंडला टर्मिनल,
खारी रोहर रोड, कंडला,
पो.बॉ.नं. 43, गांधीधाम,
कच्छ - 370 201

पोतपत्तन स्वास्थ्य संगठन
पी.ओ. दीनदयाल पोर्ट, नया कंडला,
कच्छ - 370 201

केन्द्रीय विद्यालय रेलवे
रेलवे कॉलोनी, होटल बंसल के पीछे,
पो.बॉ.सं. 24, गांधीधाम,
कच्छ - 370 201

भारत संचार निगम लिमिटेड
टेलीफोन एक्सचेंज, दूसरा तल,
सेक्टर-8/A, टैगोर रोड,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

विकास आयुक्त का कार्यालय
कंडला विशेष आर्थिक क्षेत्र,
एनएच-8/A, गांधीधाम,
कच्छ-370 230

केन्द्रीय विद्यालय इफ्को
उदय नगर, गांधीधाम,
कच्छ - 370 201

केंद्रीय भंडारण निगम
शिरवा रेलवे स्टेशन के पास,
नया कंडला, कच्छ 370 210

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम (कोड सं. 262) के विद्यमान सदस्य कार्यालयों के नाम एवं पते

गेल (इंडिया) लिमिटेड
इंटरमीडिएट पंपिंग स्टेशन,
कि.मी. 270 स्टोन,
सामाखियाली, एनएएच-लाकडिया,
ता.-भचाऊ, कच्छ - 370 201.

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
दर्शन चैम्बर्स, प्लॉट नं. 10,
सेक्टर-1ए, गांधीधाम,
कच्छ - 370 201

केनरा बैंक
डीबीजेड(एन)-117, वार्ड सं. 12ए,
चन्दन कॉम्प्लेक्स, मेन मार्केट,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

भारतीय खाद्य निगम
एस.आर.सी. बंगला नं. 21-26,
वार्ड सं.2-बी, आदिपुर,
कच्छ-370 205

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी)
शॉप नं. 53, 54, 55 सिल्वर ऑर्क,
प्लॉट नं. 57, सेक्टर-8, टैगोर रोड,
गांधीधाम - 370 201

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
आरती कॉम्प्लेक्स, सीबीजेड एस-48,
ग्राउंड फ्लोर, नगरपालिका के सामने,
रोटरी भवन, गांधीधाम, कच्छ-370 201

पॉवरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
400/220, के.वी.भचाऊ उपकेंद्र,
पोस्ट ऑफिस-भीमासर-सी,
तालुका-अंजार, कच्छ (गुजरात)

स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, प्रथम तल,
कंडला विशेष आर्थिक क्षेत्र (कासेज),
गांधीधाम, कच्छ - 370 230

सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

भारतीय जीवन बीमा निगम
प्लॉट सं. 312, वार्ड-12बी,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

बैंक ऑफ बड़ौदा
प्लॉट नं. 13, सेक्टर-9,
पो. बॉ. नं. 8, बैंकिंग सर्कल,
गांधीधाम, कच्छ-370 201

पंजाब नेशनल बैंक
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
किरण चैम्बर्स, वार्ड-9, प्लॉट नं. 11,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

बैंक ऑफ़ इंडिया,
प्लॉट नं. 1, सेक्टर-9,
बैंकिंग सर्कल,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

पंजाब एंड सिंध बैंक
प्लॉट नं. 334, वोर्ड-12/बी,
आशीर्वाद कॉम्प्लेक्स, गांधीधाम,
कच्छ - 370 201

यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
प्लॉट सं. 13, सेक्टर-9,
देना बैंक के ऊपर,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

यूको बैंक
प्लॉट सं. 6-7, सेक्टर-9,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

बैंक ऑफ महाराष्ट्र
प्लॉट नं. 334, वोर्ड-12/बी,
आशीर्वाद कॉम्प्लेक्स, गांधीधाम,
कच्छ - 370 201

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
प्लॉट नं. 341, वार्ड-12/बी,
आईसीआईसीआई बैंक के ऊपर,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

इंडियन ओवरसीज बैंक
सेक्टर-4, प्लॉट नं. 91-100,
गांधीधाम, कच्छ - 370 201

आत्मनिर्भर भारत
अवसर, चुनौतियाँ एवं सफलता

श्रीमती मेरी विजयकुमार
वरिष्ठ लिपिक, वित्त विभाग
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

आत्मनिर्भर भारत

प्रस्तावना :

''**सर्व परवशं दुःखम् सर्वमात्मवश सुखम्**'' अर्थात् सब तरह से दूसरों पर निर्भर रहना ही दुःख है तथा सब प्रकार से आत्मनिर्भर होना ही सुख है । कोई भी चीज अचानक आत्मनिर्भर नहीं हो जाती, तो इसका सीधा सा मतलब यह है कि, आनेवाले समय में हम भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाले हैं । भारत अगर प्रगति करता है तो वह दुनिया की प्रगति में भी अपना योगदान देता है । 'भारत को उस बाज की तरह ऊँची उड़ान भरनी है जो कि सबसे ऊपर पहुँच कर भी हर जीव पर नजर रखता है' ।

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ :-

निर्भरता अर्थात् : आनेवाले समय में कुछ आवश्यकतायें होती हैं, ये आवश्यकतायें चाहे वस्तु की हों या सेवा की हों, तब हम दूसरे व्यक्ति पर या देश पर निर्भर होते हैं। यह निर्भरता की स्थिति है ।

आत्मनिर्भरता अर्थात् : वस्तु और सेवा की आवश्यकता हमें स्वयं के द्वारा पूर्ति करनी है । इसके लिए हम घरेलू (भारत की) स्तर पर उत्पादन करेंगे, स्वयं की आवश्यकतायें पूरा कर लेते हैं, उस स्थिति को ही हम आत्मनिर्भरता की स्थिति कहते हैं। हमें अपनी वस्तुओं और सेवाओं की गुणवंता (ट्रेड-मार्क) इस स्तर पर करना है कि लोग उसे खरीदें और उसे चुनें ।

अवसर : आज पूरा विश्व कोरोना रुपी महामारी से लड़ रहा है यही वक्त है जब हम अपने इस आपदा को अवसर में बदल सकें । यह महामारी मकड़ी की जाल की तरह चारों ओर से घेरा हुआ है । ''**समस्या जीवन का प्रतीक है**'' ।

वर्ष 1991 में आर्थिक सुधार लागू हुए तो वैश्वीकरण से वस्तु और सेवा का एक देश दूसरे देश पर निर्भर होने लगे । भारत भी उसी स्थिति में था । कोविड आने से पहले भारत की आर्थिक वृद्धि शून्य पर जाने वाली थी । दो, तीन, चार कुछ कुछ क्षेत्रों मे तो नकारात्मक, और हुआ यह कि जैसे ही कोविड-19 महामारी आई तो जिन वस्तु और सेवा का हम आयात करते थे वे वस्तुएं और सेवाएं बंद होने लगीं । आयात रुक गया जिससे भारत देश की जो आर्थिक वृद्धि और अर्थव्यवस्था की गति की जो कसर बची हुई थी वह भी कोविड-19 आने के बाद पूरी हो गई । आत्मनिर्भर भारत होने की जरुरत हम को इसलिए पड़ी क्योंकि निर्भरता धीरे-धीरे बढ़ती गई । इसलिए मांग उठने लगी कि कैसे भी करके फिर से हर एक चीज को प्रोत्साहन दिया जाए, चाहे वह भारत का कृषि क्षेत्र हो, निर्माण क्षेत्र हो या निवेश हो, इन्हें फिर से गति दी जाए, जिससे भारत का फिर से उत्पादन शुरु हो जाए । जब तक आर्थिक वृद्धि नहीं होगी देश में नागरिक का कल्याण, खुशहाली नहीं हो सकता । इसके अतिरिक्त निम्नलिखित अवसर भी हैं:-

❀ भारत देश के वित्तीय संस्थानों का पिछड़ा हुआ होने के कारण । ❀ भारत की अर्थव्यवस्था का विश्व के दूसरे विकासशील देशों से एकीकृत न होने के कारण । ❀ कम पढ़ी-लिखी भारी जनसंख्या के कारण (कम साक्षरता दर) ❀ विदेशी पूंजी निवेश पर सरकारी रोक होने के कारण । ❀ शेयर बाजार में अनेक बड़े और छोटे घपले होने के कारण । इसलिए उपरोक्त अवसरों के कारण तथा पूरे आर्थिक वृद्धि को गति देने के लिए एक आर्थिक राहत पैकेज शुरु किया गया ।

"आवश्यकता आविष्कारों की जननी है ।"

यह पैकेज उन श्रमिकों के लिए है जो हर स्थिति में हर मौसम में देश वासियों के लिए परिश्रम करते हैं तथा यह हमारे देश के मध्यम वर्ग के लिए है ।

- योजना का नाम : आत्मनिर्भर भारत अभियान
- किस के द्वारा आरंभ की गई : प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी
- योजना का प्रकार : केंद्र सरकार
- लाभार्थी : देशका प्रत्येक नागरिक
- उदे्श्य : समृद्ध और संपन्न भारत का निर्माण
- आरंभ की तिथि : 12 मई 2020
- पैकेज की धनराशि : 20 लाख करोड़ रूपए

इस रकम को एक छतरी की तरह सभी क्षेत्रों में विभाजित किया गया है । इस राहत पैकेज में सभी क्षेत्रों की दक्षता (कुशलता) बढ़ेगी और गुणवत्ता भी सुनिश्चित (पूरा यकीन वाला) होगी । जिससे भारत कोविड महामारी से लड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा और एक आधुनिक भारत की पहचान बनेगा । राहत पैकेज से भारत में लोगों को कामकाज करने की सुविधा उपलब्ध करायी जाएगी । आनेवाले समय में भारत अपनी जरुरत वाली वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में आत्मनिर्भर हो सकता है । मूल राशि केंद्र सरकार के द्वारा खर्च की जाती है ।

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना :

देश में कोरोना महामारी से तालाबंदी के कारण नाई की दुकानें, मोची, पान की दुकानें व धोबी की दुकानें, रेहड़ी–पटरी वालों की आजीविका पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है । इस समस्या को खत्म करने के लिए प्रधानमंत्रीजी के द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक नई योजना की घोषणा की गयी है ।

प्रावधान :

इस योजना के अंतर्गत रेहड़ी–पटरी वालों को सरकार द्वारा लोन मुहैया कराया जाएगा । इस योजना के अंतर्गत यह छोटे सड़क विक्रेताओं को अपना काम फिर से शुरु करने में सक्षम बनाएगा । इस योजना के जरिये आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी। **यह पांच आधार स्तंभों पर आधारित है ।**

आत्मनिर्भर भारत अभियान

5 स्तंभ

अर्थव्यवस्था	अवसंरचना	प्रणाली	जनसांख्यिकी	मांग और आपूर्ति
अर्थव्यवस्था में कहा गया है कि जो हमारी अब अर्थव्यवस्था होगी वह वृद्धि करनेवाली नहीं, बल्कि तीव्र उछाल करने वाली होगी ।	जो आधुनिक भारत की आधारशिला रख सके तथा विश्वस्तर पर क्रियाशील अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने वाली जैसे कि सड़क और बिजली ।	21वीं सदी की प्रणाली होगी जो पूर्णतया प्रौद्योगिकी पर आधारित होगी । चाहे वह लेनदेन हो या सरकार द्वारा सेवाएं देने की हो, इन सबको और सक्षम किया जाएगा ।	जनसांख्यिकी बहुत कुशल होगी तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान की ऊर्जा की स्त्रोत होगी ।	मांग पूर्ति के चक्र से और क्षमता का पूर्ण तरीके से उपयोग किया जाएगा ।

मांग और आपूर्ति का मतलब भारत की जनसंख्या सरकार और देश के उत्पादन कर्ताओं से मांग करेंगे और वे हमारे मांग के अनुरुप पूर्ति करेंगे । उदाहरण के तौर पर माना कि भारत सरकार ने मोबाईल बनाने के लिए प्रोत्साहित किया और उसने मोबाईल बनाना शुरु कर दिया लेकिन कोई खरीद नहीं रहा है उसकी कोई मांग ही नहीं है, तो एक तरफ उसकी पूर्ति की जाएगी और दूसरी तरफ उसकी मांग भी बढ़ायी जायेगी । इस तरह से मांग और पूर्ति का जो चक्र और क्षमता है, भारत उसका पूरा उपयोग करेगा ।

ऐसा तो नहीं है कि, भारत एक या दो महिनों में आत्मनिर्भर बन जाएगा, इसलिए भारत को आत्मनिर्भर होने के लिए दो चरणों की जरुरत पड़ेगी । यह एक–एक चरण करके पूरा होगा, क्योंकि भारत के पास इतनी पूंजी नहीं है कि सब क्षेत्रों को एक साथ विकसित कर सके और भारत स्वयं से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने लगे ।

प्राथमिक चरण : इसमें चिकित्सा, वस्त्र, विद्युत, प्लास्टिक खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जायेगा ताकि स्थानीय निर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके ।

द्वितीय चरण : इस चरण में रत्न एवं आभूषण, स्टील, फार्मा जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जायेगा ।

इसके अतिरिक्त सरकार ने 8 बड़े क्षेत्रों के लिए घोषणा की है । जो कि निम्नानुसार है :–

❀ खनिज ❀ रक्षा निर्माण ❀ हवाई क्षेत्र ❀ कोयला ❀ बिजली वितरण कंपनियां ❀ परमाणु उर्जा ❀ अंतरिक्ष क्षेत्र ❀ केंद्र शासित प्रदेश

नीचे दर्शाये गये क्षेत्रों में विशेष आर्थिक राहत पैकेज के द्वारा सुधार किया जाता है ।

कृषि प्रणाली : इसके लिए ग्यारह घोषणाएं की गई हैं, जिसके द्वारा किसानों की आय दुगुनी होना । सभी फलों और सब्जियों को कवर करने के लिए ऑपरेशन ग्रीन का विस्तार किया जाना । कृषि बिक्री सुधारों को एक नये कानून के माध्यम से लागू किया जाना जो अंतरराज्यीय व्यापार के लिए बाधाओं को दूर करेगा । किसान को सुविधात्मक कृषि उपज के माध्यम से मूल्य और गुणवत्ता का आश्वासन दिया जाना । ''स्वामी फंड'' धान उत्पादन योजना से संबंधित है ।

नियम और कानून : भारत के नियम और कानून को स्पष्ट और सरल किया जाना जिससे लोग आकर्षित होकर आत्मनिर्भर भारत के लिए उत्पादन करेंगे ।

नये व्यवसाय : नये व्यवसाय को प्रोत्साहित करना होगा जिससे पूंजी की कमी होने पर, भारत को निवेश को बढ़ाना होगा जिससे मेक इन इंडिया हो पायेगा ।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के लाभार्थी :

देश के गरीब नागरिक, श्रमिक, प्रवासी मजदूर, पशुपालक, मछुआरे, किसान, संगठित क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र के व्यक्ति, कुटीर उद्योग, मधुमक्खी पालन, मध्यमवर्गीय उद्योग, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय

चुनौतियां :– निम्न प्रकार हैं :–

कोरोना/कोविड–19 : कोरोना की महामारी में, भारत की खराब आर्थिक स्थिति और बेरोजगारी की समस्या की चुनौती हो गई है।

अमेरिका : बिना पैंदे का लोटा है, जो किधर भी लुढक जाता है, कभी इस देश को बचाता है तो कभी उसी देश के विरोध में होता है। यह भी एक चुनौती है ।

भारत – चीन के मध्य विवादित मुद्दे : चीन हमेशा मैकमोहन रेखा की अवमानना करता है । चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश पर अनुचित तरीके से अधिकार जताया जाता है । वर्ष 1962 में भारत – चीन युद्ध इसी का परिणाम है ।

भारत और पाकिस्तान के मध्य विवादित मुद्दे : पाकिस्तान जम्मू कश्मीर पर हमेशा से अधिकार जताता आ रहा है । विशेषकर जम्मू कश्मीर में हमेशा आतंकवादी गतिविधियों से कानून व्यवस्था पर प्रभाव डाल रहा है ।

सिंधु व सहायक नदी का जल बंटवारा ,

भारत व गुजरात सरक्रीक विवाद,

भारत-बांगलादेश के मध्य विवादित बिंदु : सीमा विवाद, तीन वीघा जमीन विवाद, न्यूमूर द्वीप विवाद, बांगलादेश चकमा घुसपैठियों से संबंधित विवाद आदि ।

नेपाल सीमा विवाद :

भारत और श्रीलंका विवादित मुद्दे :-

भारत और श्रीलंका के बीच जलीय क्षेत्र को लेकर विवाद, मछुआरों का भारतीय आधिपत्य क्षेत्र में बिना अनुमति प्रवेश, श्रीलंका के उग्रवादी तमिल संगठन का प्रभाव भी भारतीय राज्यों में देखा गया है । भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या लिट्टे द्वारा की गई थी ।

इसके अलावा भी बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा जो कि निम्नलिखित हैं :-

- हमारे देश में आज भी जाति, धर्म, लिंग का भेदभाव बना हुआ है, जो हमारी तरक्की में सबसे बड़ा बाधक है । इसे दूर करना आवश्यक है ।
- भारत के सभी व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है ।
- गरीब व्यक्तियों के लिए कम दामों में भोजन उपलब्ध कराना और आर्थिक स्तर पर सरकारी मदद प्रदान करना ।
- बेटियों की शादी करने से पहले उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जाए, विशेष करके गाँव के क्षेत्रों में तथा गाँव-शहरों में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अच्छी योजनाओं की शुरुआत करना । "**बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ**" योजना को और आगे बढ़ाना चाहिए ।
- किसानों की फसलों को सरकार द्वारा ज्यादा दाम में खरीदना तथा सरकार द्वारा किसानों को कृषि से संबंधित बीज, अन्य पदार्थों को कम दामों में उपलब्ध कराना और अपने देश में उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग में लाया जाए उससे खाद्यान्न का उत्पादन भरपूर मात्रा में करना आदि ।
- हमारे देश में जितने भी पर्यटन स्थल है उन स्थलों को बहुत अच्छा बना करके अपने देश के पर्यटन उद्योग में विकास करना ।
- वन के जानवरों को बचाने के लिए चिड़ियाघरों की संख्या को बढ़ाना ।

"कोई भी संकट चुनौतियों के साथ संभावनाएं भी लाता है ।"

इन चुनौतियों के समाधान हेतु भारत द्वारा निम्न समाधान किया जाना आवश्यक है । सीमा संबंधित विवादों को परस्पर सहयोग और उचित समझौतों से हल करने का प्रयास किया जाए । नदी जल विवादों में अन्य देशों से सन्धि वार्ता की जाए । आतंकवाद जैसी समस्याओं से निपटने के लिए भारत को कठोर व त्वरित कार्यवाही किया जाना आवश्यक है । सेना को प्रशिक्षित और उन्नत बनाना आदि ।

उपरोक्त कदम उठाकर बाह्य सुरक्षा को उचित ढंग से स्थापित किया जा सकता है, और भारत की एकता, अखण्डता, संप्रभुता को बनाए रखा जा सकता है ।

सफलता :

- **"सफलता जादू से नहीं, कौशल से मिलती है ।"**
- **"भगवान उन्हीं की सहायता करता है जो खुद की सहायता करते हैं"**
- **"सफलता की राह में इच्छा नहीं इरादा होना चाहिए ।"**
- **"सफल देश अपनी कमियों को पहचानता है और शक्तियों को बढ़ाता है ।"**
- **"सफलता पर कोई लक्ष्मण रेखा नहीं खींच सकता, इसका कोई बंद दायरा नहीं हो सकता"**

भारत ने भयानक महामारी से लड़ने के लिए कई वस्तुओं का उत्पादन शुरु किया है, जैसे कि व्यक्ति गत सुरक्षा उपकरण, वातायन, मुखावरण, प्रक्षालक और रसीकरण आदि ।

निम्नलिखित भारत की सबसे बड़ी परियोजनाएं है, जो सफलता की ओर जा रही हैं :-

सेतु भारतम् परियोजना : इसमें भारत के सभी राजमार्गों को आधुनिक बनाने का लक्ष्य है । रेलवे क्रॉसिंग से मुक्त करके यातायात की गति को बढ़ाना है ।

बोगीबील ब्रिज परियोजना : रेलवे की इस परियोजना में अरुणाचल प्रदेश से तवांग को नॉर्थ ईस्ट के दूसरे राज्यों से जोड़ना यह इतना जोखिम भरा काम है कि अंग्रेजों ने भी इस जगह पर काम करने की हिम्मत नहीं दिखाई थी ।

धोरेड़ा स्मार्ट सिटी परियोजना : जो अहमदाबाद से 40 कि.मी. दूर है ।

अमरावती स्मार्ट सिटी परियोजना : आंध्रप्रदेश की राजधानी अभी हैदराबाद है । लेकिन जल्द ही आंध्रप्रदेश की पहचान बदलने वाली है । राजधानी अमरावती हो जाएगी जो आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में है । वर्ष 2025 तक सफलता मिल जाएगी ।

सोलर एनर्जी मेगा प्लांट : बिलजी की कमी पूरा करने के लिए भारत का सबसे बड़ा प्लांट है । इस पर हाल ही में भारत ने अमेरिका से समझौता किया है ।

गुजरात गोरखपुर गैस पाइपलाइन परियोजना : भारतीय तेल निगम, आई.ओ.सी. गुजरात से गोरखपुर तक भारत की सबसे लंबी एलपीजी पाइप लाइन लगाई है ।

चार धाम राजमार्ग विकास परियोजना : हिमाचल के सभी तीर्थ स्थलों को देश में चारों धामों से जोड़ने की योजना ।

भारत माला परियोजना : यह गुजरात से मिजोरम तक आपस में जोड़ती है । महाराष्ट्र को पश्चिम बंगाल से सड़क नेटवर्क द्वारा जोड़ देगा । इसलिए इसका नाम भारत माला परियोजना रखा गया है ।

नदी जोड़ परियोजना : ''तस्वीर तथा तकदीर बदल सकती है'' ।

भारत सरकार देश की सबसे बड़ी नदी जोड़ परियोजना पर तेजी से काम कर रही है । यह परियोजना के पूरा होने के बाद भारत में एक लम्बे जल मार्ग का विकास हो सकेगा जो दुनिया की सबसे लंबी नदी, नील नदी से दोगुना होगा । इस योजना के अंतर्गत 30 नदियों को एक दूसरे से जोड़ने का काम चल रहा है । विशेषज्ञों का मानना है कि इस परियोजना के बाढ़ तथा अकाल जैसी समस्याओं में राहत मिल सकेगी ।

भारत का अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन :

अब भारत में **इसरो आत्मा है ।** एक घटना ने पूरे देश को 100 सैकंड के अंदर जगा दिया और 100 सैकंड में पूरे भारत को जोड़ दिया । भारत की ओर से भेजा गया **मंगल यान,** मंगल की कक्षा में पहुंचने में कामयाब हो गया था और वहां स्थापित भी हो गया । मंगल मिशन में पहले प्रयास में ही सफलता पाने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया । भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने कम संसाधनों में भी **चंद्रयान-1** को चांद पर भेजकर इतिहास रच दिया था, **एक साथ रिकॉर्ड 104 सैटेलाइट का प्रक्षेपण करके** भी भारत को विश्व के अंतरिक्ष बाजार में एक और उपलब्धि को प्राप्त कराया तथा कामयाब होने वाले देशों में भारत को विश्व में पहला देश बना दिया ।

भारत बनेगा दुनिया का ''संकट मोचक'' WHO ने कहा भारत बन सकता है ''नजीर'' । इसरो की सफलता देश के लिए बड़ा गौरव है। भारत की ताकत को दुनिया ने माना ''लोहा'' । ग्लोबल फायर पावर की रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया का चौथा ताकतवर देश है ।

बुलेट ट्रेन की रफतार की तरह, नए भारत के बढ़ते कदम तथा संकल्प से समृद्धि की यह गौरव यात्रा पूरी होगी ।

उपसंहार/निष्कर्ष : हम सहजता से मिल जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों और कच्चे मालों के द्वारा वस्तुओं का निर्माण करके अपने आसपास के बजारों में इसे बेच सकते है । इससे हम स्वयं के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत की राह में अपना योगदान दे सकते हैं और हम सब मिलकर एक आत्मनिर्भर भारत निर्माण के सपने को मजबूत बनाने में सहयोग कर सकते हैं । तो आओ हम सब मिलकर अपने इस स्वाभिमानी आत्मनिर्भर भारत को बनाने का संकल्प पारित करें । हमें अपना हौसला बुलंद रखना होगा । स्वदेशी को हमें अपना जीवन-मंत्र बनाना होगा । ''जबरदस्ती से कराया गया काम कुछ वर्ष, लेकिन स्वेच्छा से किया गया काम उम्र भर चलता है ।''

बेटी

जीवन की सृष्टि की सबसे अनुपम रचना ईश्वर ने एक बेटी के स्वरुप में दिया...
जिस परिवार में बेटी है वहाँ पे खुशी का जो आलम है । इसी को चन्द पंक्तियों में प्रस्तुत किया है...

श्री कुन्दन कुमार
निरीक्षक,
सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय

जिस दिन से तेरा जन्म हुआ,
घर में खुशहाली सी छायी है ।
ऐसा लगता है जीवन में,
घर में साक्षात लक्ष्मी आयी हैं ।
ना अब कोई अंधेरो की परछाई हैं,
सच में वो देवी रुप में घर आयी है ।
सूर्य किरण जो पहली धरा पे आयी,
मंद मंद वो मुसकायी,
खुशियों से तो चहक पड़ी,
जब रात चाँदनी तारों से भरी,
अब घर में खुशियों का क्या कहना है,
मेरे घर में जो बिटिया आयी है ।
उसकी तोतली बातों का क्या कहना,
ठुमक ठुमक कर चलती थी,
उँगलियों से बाल घुमाना,
कभी रो-रो कर प्यार जताना,
ऐसा लगता है जीवन में,
घर में लक्ष्मी आयीं हैं ।
जैसे जैसे दिन जो बीतें,
होने लगे स्कूल की तैयारी,
समय से पहले वो जागती थी,
जैसे सरस्वती उसमें बसती थी,
कभी ना मिलीं कोई शिकायत,
रोज़ करती अपनी माँ की हिमायत,

बेटी की ममता का क्या कहना,
घर में भाई का ख्याल जो रखना,
मम्मी, पापा, दादा, दादी सब पे प्यार जताती है,
परिवर को जो एक सूत्र में बाँधे बेटी वही कहलाती है ।
ऐसा लगता है बेटी है अनुपम उपहार,
उसके बिना जीवन बेकार,
नारी का स्वरुप है बेटी,
यों जोड़ती रिश्तों की डोरी ।
बेटी जब बहू बनी,
दु:खी मन खुशी का क्या कहना,
घर घर की रीत यही है,
दो परिवार की प्रीत यही है ।
ममता बनकर जो ममता फैलाया,
नारी स्वरुप का क्या कहना,
ममता के आँचल में ऐसे सुलाया,
जैसे संपूर्ण वसुंधरा अपनाया,
हर स्वरुप में वो परिपूर्ण है ।
उसकी खुशियों का क्या कहना,
ऐसा लगता है इस धरा पर,
बेटी बिना जीवन अधूरा है अपना...
जिस दिन से तेरा जन्म हुआ,
घर में खुशहाली सी छायी है,
ऐसा लगता है जीवन में
सब खुशियां हमने पायी है ।

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक - दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट, गांधीधाम

हमारे देश के डॉक्टर

किसी फरिश्ते से कम नहीं हैं,
धरती पे भगवान का स्वरूप हैं,
हमारे लिए फौलादी सुरक्षा कवच हैं,
हमारे देश के अपने डॉक्टर ।

खुद का चैन जो गँवाते हैं,
रातों को भी जागते रहते हैं,
हम सभी की सेवा खूब करते हैं,
हमारे देश के अपने डॉक्टर ।

अपना कभी नहीं सोचते हैं,
हपने हर सुख का त्याग करते हैं,
फिर भी हमेशा हँसते रहते हैं,
हमारे देश के अपने डॉक्टर ।

कोरोना काल के किस्से जग ज़ाहिर हैं,
जिसमें खूब उन्होंने हमें संभाला है,
प्रशंसा के बहुत ही काबिल हैं,
हमारे देश के अपने डॉक्टर ।

हमको जीने का अंदाज़ सिखाया है,
जान पर खेलकर भी फर्ज़ निभाया है,
हमारा और हमारे देश का गर्व हैं,
हमारे देश के अपने डॉक्टर ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम
राजभाषा शील्ड योजना – 2019 पुरस्कार वितरण समारोह
(दि. 08-09-2020)

प्रथम पुरस्कार (सरकारी कार्यालय वर्ग) – दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट, गांधीधाम

द्वितीय पुरस्कार (सरकारी कार्यालय वर्ग) – दीपस्तंभ और दीपपोत (वीटीएस) निदेशालय, गांधीधाम

तृतीय पुरस्कार (सरकारी कार्यालय वर्ग) – सीमाशुल्क आयुक्त का कार्यालय, कंडला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम
राजभाषा शील्ड योजना – 2019 पुरस्कार वितरण समारोह
(दि. 08-09-2020)

प्रथम पुरस्कार (उपक्रम कार्यालय वर्ग) – इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कंडला

द्वितीय पुरस्कार (उपक्रम कार्यालय वर्ग) – हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कंडला

तृतीय पुरस्कार (उपक्रम कार्यालय वर्ग)
भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कंडला

प्रथम पुरस्कार (बैंक कार्यालय वर्ग)
कॉर्पोरेशन बैंक, गांधीधाम

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा दि. 19 सितंबर 2020 को नराकास सदस्य कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों हेतु आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण (दि. 28-09-2020)

प्रथम पुरस्कार
श्री श्याम प्रताप सिंह, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, कंडला

द्वितीय पुरस्कार
श्री सुगन लाल, केंद्रीय विद्यालय रेलवे, गांधीधाम

तृतीय पुरस्कार
श्री भागीरथ राम, केंद्रीय विद्यालय रेलवे, गांधीधाम

सांत्वना पुरस्कार
श्री अमरेन्द्र कुमार, पश्चिम रेलवे, गांधीधाम

सांत्वना पुरस्कार
श्री मनीष सिंह, समुद्री वाणिज्यिक विभाग, गांधीधाम

नराकास निबंध प्रतियोगिता के सभी पुरस्कार विजेता सदस्य सचिव के साथ

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में हिंदी संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन (दि. 04-03-2021)

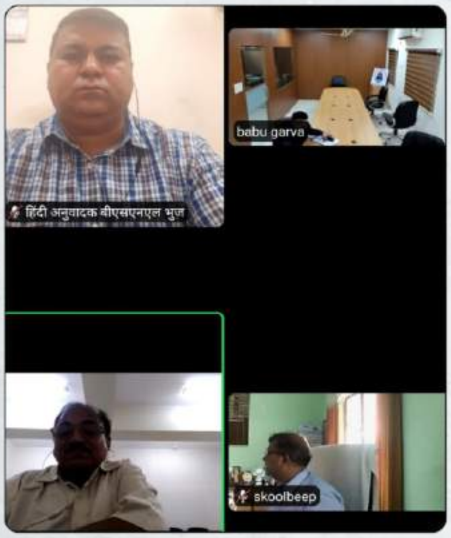

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कंडला/गांधीधाम के तत्वावधान में दिनांक 04 मार्च 2021 को एक ऑनलाइन हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में संकाय के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के हिंदी शिक्षण योजना, मुंबई के उप निदेशक (पश्चिम) डॉ. एम. एल. गुप्ता जी ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर उन्होंने 'राजभाषा हिंदी का व्यवहारिक पक्ष और प्रशिक्षण का महत्व' विषय पर एक अत्यंत ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया । नराकास के सदस्य के रूप में कंडला/गांधीधाम स्थित डीपीटी सहित विभिन्न केंद्र सरकार के कार्यालयों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/बैंकों/बीमा कंपनियों के कई अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया और व्याख्यान का लाभ उठाया । सभी सहभागियों ने श्री गुप्ता साहब के प्रति उनके व्याख्यान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया और संतोष प्रकट किया । संगोष्ठी के अंत में सदस्य-सचिव, नराकास एवं हिंदी अधिकारी, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री शैलेन्द्र कुमार पांडेय ने डॉ. एम. एल. गुप्ता एवं भाग लेनेवाले सदस्य कार्यालयों के सभी प्रतिनिधियों का आभार प्रकट किया ।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

कांडला टर्मिनल कार्यालय–गांधीधाम

(संयुक्त हिंदी कार्यशाला– 18 मार्च, 2021)

दिनांक 29 जनवरी, 2021 को संपन्न नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की ई-बैठक में दिए गए अपने आश्वासन को पूरा करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रशिक्षण कक्ष में नगर राजभाषा

कार्यान्वियन समिति, कांडला - गांधीधाम के तत्वावधान में हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड – कांडला टमिनल कार्यालय द्वारा दिनांक 18 मार्च, 2021 को नराकास के सदस्य कार्यालयों के कामिकों हेतु एक भव्य और सफल संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 25 सदस्य कार्यालयों के 35 कामिक द्वारा प्रतिभागिता की गई। संयुक्त हिंद कार्यशाला का उद्घाटन दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के वरिष्ठ उप सचिव श्री वाई. के. सिंह जी द्वारा की गईं। सभी उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत एचपीसीएल के मुख्य प्रबंधक श्री राम विजय पांडेय जी द्वारा किया गया। तत्पश्चात,

एचपीसीएल के सहायक प्रबंधक - राजभाषा श्री सलीम शेख जी ने सभी सहभागियों को कार्यालय में हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित विस्तृत जानकारी देने के उद्देश्य से एक रोचक पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। कार्यशाला के दौरान राजभाषा कार्यान्वियन पर दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के हिंदी अधिकारी एवं सदस्य सचिव नराकास श्री शैलेंद्र कुमार पांडेय ने जानकारी प्रदान की। इसके अलावा कार्यशाला में संकाय के रूप में उपस्थित तोलानी कॉलेज की हिंदी प्राध्यापिका डॉ. रेनू हिंगोरानी जी ने हिंदी के महत्व और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के अंतिम चरण में सहभागियों के लिए एक वस्तुनिष्ठ लघु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

कार्यशाला के अंत में एचपीसीएल के श्री राजेश पारिख जी ने कार्यशाला को सफल बनाने में अपना सहयोग देने वाले सभी सहभागी कार्यालयों के प्रतिनिधियों और सभी उपस्थित संकाय और दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रबंधन का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यशाला आयोजन की सभी व्यवस्थाएं टमिनल प्रबंधक श्री राम विजय पांडेय जी के नेतृत्व में सहायक प्रबंधक-राजभाषा श्री सलीम शेख, श्री राजेश पारिख एवं उनकी टीम द्वारा सफलतापूर्वक की गईं।

फौजी दिल से सलाम

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक – दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
गांधीधाम (कच्छ)

सलाम सलाम,
सलाम सलाम,
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

दिन का चैन गँवाते हो,
रातों को जागते रहते हो,
अपने परिवार से हमेशा दूर ही रहते हो,
और खुशी खुशी छोड़ देते हो,
अपने कई अरमान ।
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

मेरे देश की सीमाओं पे,
हर ठंडी में हर गर्मी में,
अपना फर्ज खूब निभाते हो,
और कर देते हो,
अपनी कई नींदे कुर्बान ।
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

मेरे देश की सुरक्षा में,
दुश्मनों से उसकी रक्षा में,
नहीं कभी भी पीछे हटते हो,
और नहीं रखते हो,
खुद का कभी ध्यान ।
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

हम हर त्यौहार मनाते हैं,
हर पल मस्ती में रहते हैं,
पर तुम सदैव सतर्क रहते हो,
और रखते हो हमेशा,
हथेली पे अपने प्राण,
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

तुम हमेशा जागते रहते हो,
इसलिए हम चैन से सोते हैं,
अपनी पहरेदारी खूब निभाते हो,
और दे देते हो,
अपनी खुशियों का बलिदान,
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

जीवन भर संघर्ष करते रहते हो,
फिर भी शिकायत कभी न करते हो,
अपने देश से प्यार बहुत ही करते हो,
और करते हो हम पे,
कई अनगिनत एहसान ।
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

इरादों में तुम्हारे दृढ़ता है,
मुख पे हमेशा निडरता है,
कोई खौफ़ नहीं मरने का है,
फिर तुमसे अच्छा होगा कौन,
हमारे भारत के निगहबान,
मेरे भारत के फौजी,
तुम्हें दिल से सलाम ।

यूको बैंक, गांधीधाम की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

यूको बैंक की गांधीधाम शाखा में आधार सेंटर का प्रारंभ

अहमदाबाद अंचल प्रबंधक श्री पराग शाह एवं शाखा प्रमुख श्री मोहनलाल मंडावरिया की उपस्थिति में फरवरी 2021 से यूको बैंक की गांधीधाम शाखा में आधार सेंटर का प्रारंभ किया गया ।

यूको बैंक, गांधीधाम शाखा में वसूली अभियान

यूको बैंक, गांधीधाम शाखा के स्टाफ सदस्यों ने वसूली अभियान के दौरान एनपीए उधारकर्ताओं से मिलकर एनपीए खातों के निपटान हेतु समझाया तथा शीघ्र एनपीए खातों में राशि जमा कर ऋण से मुक्त होने के लिए उन्हें तैयार किया ।

नित्य नवीन संकल्प हमारा

श्री हितेश एच. बालिया
समुद्री वाणिज्यिक विभाग

नित्य नवीन संकल्प हमारा
सब के मन में हो उजियारा,
नित्य नवीन संकल्प हमारा ।

आसमान से आनंद बरसे,
धरातल पर कोई नहीं तरसे,
तृप्त प्रफुल्लित जन-जन सारा ।...नित्य नवीन

कोई धरा पर दुख नहीं पावे,
हर्षित हो सब सुख ही को पावे,
तन-मन-धन सब का हो न्यारा ।...नित्य नवीन

मंगल ही हो सबका जग में,
दंगल न हो किसी के मन में,
समता से भरा हो, संसार सारा ।...नित्य नवीन
संकल्प हमारा ।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला–गांधीधाम ''ख'' क्षेत्र में आती है ।
इस प्रकार सभी सदस्य कार्यालयों के लिए ''ख'' क्षेत्र के कॉलम में दिए गए लक्ष्य लागू होंगे ।

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** **4.** क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.** ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **55%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	40%	30%	20%
			(न्यूनतम अनुभाग)	
			सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।	

एक मन अंदर एक मन बाहर

श्री धर्मेन्द्र कुमार
हिन्दी आशुलिपिक
समुद्री वाणिज्यिक विभाग

एक मन अंदर एक मन बाहर,
एक मन, मेरे मन के भीतर,
एक मन, मन के बाहर-बाहर,
एक मन कहता सब छू लूं, सब पा लूं
एक मन कहता तटस्थ विरक्त रहा कर ।

एक मन दरिया किनारे ठहरा,
एक मन दरिया में बहता जाता,
एक मन कहता रोक लूं तुम्हें,
एक मन निरंतर बहता-बहता रहता ।

एक मन बगिया के बाहर,
एक मन परागों-पंखुड़ियों के भीतर,
एक कहता खूब चमक लो बाहर,
दूजा कहे अंदर खिलो, चमकेगा बाहर ।

एक मन राधा-राधा बोले,
एक मन रुक्मिणी- सा त्यागी हो,
एक मन कहता सिर्फ मेरे रहना,
दूजा कहता सबके हो जाओ ।

एक मन एकाकी, मैं, ही मैं हूं,
एक मन में वसुधैव कुटुंबकम् है,
एक मन में दु:ख-दर्द मेरे ही मेरे,
दूजा कहे मेरी पीड़ा औरों से कम है ।

मुन्ना

श्रीमती रानी कुकसाल
वरि. लिपिक, विद्युत प्रभाग
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

गोरे रंग, घुंघराले बाल तथा ठंड से फटे गाल और हाथ-पैर वाला चार-पाँच साल का सुन्दर सा बच्चा बिना इलैस्टिक का निकर पहने प्लेटफॉर्म पर बेपरवाह घूम-घूमकर बरबस मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा करता है । कभी बिस्किट का रैपर तो कभी प्लास्टिक का गिलास उसके मन बहलाव का साधन होते । कोई नहीं जानता कि इतना छोटा सा बच्चा इंदौर के इस प्लेटफॉर्म पर कहाँ से आया, किसका बच्चा है और इसके माँ-बाप जीवित भी हैं या नहीं । कोई दयावश इसे खाने को दे देता तो कोई दुत्कार कर परे हटा दिया करता । माँ-बाप, भाई-बहन इस समस्त नाते-रिश्तों से अनजान उस मासूम को तो यह तक नहीं पता कि वह जिस चीज़ को खा रहा है उसका नाम क्या है या रोज़ उसके सामने से दनदनाती हुई लाल सवारी आया जाया करती है उसे क्या कहते हैं । वह तो बस बालसुलभ आश्चर्य से उसे देखता और इसके रूकने पर उसके नज़दीक जाकर छूकर उसे परखने की कोशिश करता । कभी धूप से तपती ट्रेन से उसकी कोमल हथेली जल जाती तो झटके से हाथ हटा लेता और होंठ निकालकर रोआंसा हो जाता और अगले पल सब भूल दुनिया के किसी और अजूबे की तलाश में बढ़ जाता । ट्रेन का कोई मुसाफिर दयावश जूठा, बचाखुचा बासी खाना उसे थमा देता तो बिना यह जाने कि यह खाना खराब तो नहीं हो गया है वह चुपचाप उसे खा लिया करता ।

मैं इंदौर के एक कॉलेज में प्राध्यापिका हूँ । मेरे पति देवास के प्रिंटिंग नोट प्रेस में लेखाकार हैं । नित्यप्रति देवास से इंदौर तक मैं ट्रेन से ही आवागमन किया करती हूँ ।

एक रोज़ मैं ट्रेन में बैठी अखबार पढ़ रही थी । मेरे सामने की सीट पर एक दम्पति अपने आठ-नौ साल के बच्चे के साथ बैठे थे । बोलचाल पहनावे और बैठने के तरीके से वह महिला अपने फूहड़पन का परिचय दे रही थी । बच्चे ने भी अपनी शरारतों से सबकी नाक में दम कर रखा था । कभी ऊपर की सीट से लटककर किसी के सिर पर पैर की चोट लगा बैठता तो कभी किसी के सामान पर फ्रूटी गिरा देता । पिता बीच-बीच में अपने अंग्रेजी के ज्ञान को बघारते हुए बच्चे से कहते – नॉटी बॉय, सिट डाउन लाइक अ गुड बॉय । तभी बच्चे ने भूख की रट लगा दी । महिला ने अपने पति से कहा-दीदी ने पूरियाँ, आलू की सब्ज़ी और अचार दिये हैं । बबलू को भी भूख लग रही है चलिये नाश्ता निबटा लिया जाए । पति के हामी भरने पर महिला ने बैग से नाश्ता निकालकर सीट पर रख दिया । सब्ज़ी का तेल सीट की मालिश करने को बेताब था, अचार ने सारी पूरियों के साथ होली खेल रखी थी । मैं सरक – सरक कर खिड़की से चिपकी जा रही थी कि कहीं उस तेल ने हमसे रिश्तेदारी साधी तो सारा दिन कॉलेज में परफ्यूम की जगह अचारीलाल की खुशबू फैली रहेगी । अभी बच्चा पूरी सब्ज़ी खाने जा रहा था कि पिता ने रोकते हुए सूचित किया कि सब्जी खराब हो गई है, उसमें बदबू आ रही है । अचार से पूड़ी खाने की हिदायत देकर वे सब्ज़ी फेंकने ही वाले थे कि पत्नी ने अपनी उदारता का परिचय देकर कहा – ''फेंकिए मत । कितनी मेहनत से बनाया है मेरी दीदी ने । अजी फेंकने से क्या फायदा अगर किसी के पेट में जाएगी तो दुआ देगा ।'' उसकी ऐसी ओछी विचारधारा से मैं क्षुब्ध हो गई । मैंने उसे घूरते हुए देखा और कहा – ''मैडम, जिस सब्ज़ी को आप अपने बेटे को देने से घबरा रही हैं वही सब्जी आप किसी अन्य निरीह को कैसे दे सकती हैं ? क्या उस पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा ? क्या उसके बीमार होने पर आपको दुआ मिलेगी ? अरे, अगर आप बीमार हो जाते हैं तो कम से कम दवा कराने में तो सक्षम हैं पर यदि कोई गरीब बीमार हो जाता है तो क्या वह सिवाय कराहने और तड़पने के कोई और उपाय कर सकता है ?''

उस महिला न आँखें तरेरते हुए कहा – ''हमारी बात कुछ और है हमने तो अपने बच्चे को नाज़ों से पाला है । इसलिए थोड़ी सी भी बासी चीज़ खाकर वह बीमार हो सकता है, पर इन गरीबों का क्या ? ये तो ताज़ी चीज़ को भी तब तक सम्भल कर रखते हैं जब कि तक वह खराब न हो जाए । ये तो बासी चीज़ खाने के आदी होते हैं ।

खैर उसने थोड़ी सी बहस के बाद मुँह मरोड़ते हुए उस सब्ज़ी को खिड़की से बाहर फेंक दिया ।

मैं आत्मचिंतन में डूब गई कि इन्सान कितना स्वार्थी जीव है, पुण्य बटोरकर परलोक संवारने की लालसा में वह इहलोक में ऐसे कृत्य करता है जो उसे पुण्य नहीं अपितु पाप का भागीदार बना देता है । वैसे मेरे अकेले के सोचने से क्या होता है । पता ही नहीं चला कि इस उधेड़बुन में कब ट्रेन इंदौर स्टेशन पर पहुँच गई । जब किसी के नन्हें हाथों ने मेरी नेल पॉलिश लगे लम्बे नाखूनों को कौतूहल से छुआ तब मेरी तंद्रा भंग हुई ।

अरे मुन्ना !!! मन पुलक उठा । मैं नहीं जानती कि मानवीय संवेदनाओं में बंधी यह अनजानी डोर कब इतनी मजबूत हो गई । मुन्ना भी मुझे देखकर अपनी मूक खुशी का इज़हार कर रहा था । मैंने अपने पर्स से बिस्किट का पैकेट और चॉकलेट निकालकर उसे थमाया तो वह अपने छोटे–छोटे हाथों में उन्हें पकड़े तब तक खड़ा मुझे निहारता रहा जब तक मैं प्लेटफॉर्म से बाहर नहीं निकल गई । अब तो यह रोज़ का क्रम बन गया था । वह रोज़ाना मेरा इंतज़ार करता और मैं रोज़ उसे कुछ न कुछ खाने को दिया करती । मैं प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरती तो वह आँखें मूंद कर उस ममता के रस का प्रेमपूर्ण पान करता । मैंने उसे मुन्ना का सम्बोधन दिया था । वह कुछ बोलता नहीं था जिससे कभी–कभार यह भ्रम होता था कि कहीं यह गूंगा तो नहीं है । पर कुछ समय बाद वह मुझसे इतना घुलमिल गया तो मैं कॉलेज जाने से पूर्व उसके साथ बेंच पर बैठकर उसे अपने हाथों से कुछ न कुछ खिलाया करती । धीरे–धीरे वह मेरे और निकट आने लगा । कभी–कभी वह मेरी किसी बात को दोहराकर अपनी प्रतिक्रिया देने लगा जिससे उसके मूक–बधिर होने की मेरी आशंका समाप्त हो गई । मैं समझ गई कि जब उसे किसी ने सिखाया ही नहीं तो उसको शब्द ज्ञान होगा भी कहाँ से । अब तो घर पर भी उसकी याद मुझे बेचैन करने लगी । मैं सुबह का इंतज़ार करने लगी और सुबह जब मुन्ना को अपने सम्मुख पाती तो आनन्द विभोर हो जाती ।

एक दिन मेरी ट्रेन समय से पन्द्रह–बीस मिनट पहले पहुँच गई तब मैं उसे वेटिंग रुम में ले गई और उसे नहलाकर नए कपड़े पहना दिये । मुन्ना के साथ–साथ वेटिग रुम में उपस्थित मुसाफिर भी मेरे ऐसा करने पर हतप्रभ थे । खैर इन सारी बातों से अनजान मैं ममता में सराबोर उस नन्हीं सी जान पर अपना प्रेम–पात्र उड़ेलने में व्यस्त थी । मैं यह सब अपने आत्मसुख की खातिर कर रही थी । किसी को दिखाने या रिझाने के लिए नहीं । जब मुन्ना नहा धो कर नए कपड़े में तैयार हो गया तो ऐसा लगा जैसे चन्द्रमा बादल की मलिन परत से बाहर निकल आया है । अब मेरे मन में खुशी की जगह भय ने घर कर लिया । इतना सुन्दर बच्चा तो किसी का दिल मोह लेगा । ऐसे में कोई इस बच्चे को चुरा तो नहीं लेगा ? कहीं किसी गलत व्यक्ति की नज़र तो नहीं पड़ जाएगी इस पर ? कहीं...नहीं नहीं मैंने उसे अपने हृदय से लगा लिया । भय मेरी आँखों से अविरल धारा बनकर बह निकला । मैं कैसे रह पाऊँगी इसे देखे बिना ? लोग मेरे पास आए मेरे कंधे पर हाथ रखा और पूछा उसके साथ आपका कोई रिश्ता है क्या? मैंने आँखों पोंछी और सिर हिलाकर ना कहा और उसका हाथ पकड़कर बाहर आई । बिस्किट दिया और बेंच के पास बिठा दिया ।

अगले दिन सुबह जब मैं इंदौर पहुँची तो मुझे मुन्ना कहीं नज़र नहीं आया । मैं चारों ओर नज़रे दौड़ा–दौड़ा कर उसे ढूँढने लगी । मन विविध आशंकाओं से घिर गया । कहीं कल नए कपड़े में लिपटे मुन्ना को कोई उठा तो नहीं ले गया ? मासूम को पता न चला हो और वह प्लेटफॉर्म के नीचे पटरियों में या स्टेशन के बाहर रोड पर तो नहीं चला गया होगा ? नहीं, नहीं ऐसा कुछ नहीं हुआ होगा उस मासूम के साथ । मन ही मन मुन्ना की सलामती की दुआ मांगती मैं बेतहाशा प्लेटफॉर्म पर भटक रही थी । मैं भूल गई कि मुझे कॉलेज जाना है, मैं भूल गई कि जिसे मैं बदहवास ढूँढ रही हूँ उससे दूर–दूर का कोई नाता नहीं है मेरा ।

लोगों से पूछा पर मायूसी ही हाथ लगी । हताश होकर मैं प्लेटफॉर्म के अंतिम छोर पर बनी बेंच पर बैठ गई तभी बेंच के पीछे से किसी छोटे बच्चे के कराहने की आवज़ से मैं चौंक पड़ी । मैंने हड़बड़ाकर पीछे देखा । मुन्ना मिट्टी में लेटा था । उसकी आँखें सूजकर बंद पड़ी थीं । उसमें उठने तक की ताकत न थी । मैंने लपककर उसे गोद में उठा लिया और अपने सीने से लगाकर बिलख पड़ी । मैं उसे गोद में लेकर स्टेशन के बाहर आई और रिक्शा में बैठकर अस्पताल पहुँची । डॉक्टर ने बताया कि बच्चा बुखार के कारण काफी कमज़ोर पड़ चुका है । इसे तुरन्त अस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा । मैंने उसे भर्ती करवा दिया और उसके पास ही बैठी रही । मेरा मन उसकी उस दशा पर कतरा–कतरा रो रहा था । मैं कश्मकश में डूब गई । मैं उसे पुन: मरने के लिये

उसी प्लेटफॉर्म पर नहीं छोड़ सकती । पता नहीं इसे घर ले जाने पर विपुल की क्या प्रतिक्रिया होगी । वैसे भी बिना पुलिस को इत्तला दिये किसी बच्चे को अपने घर ले जाना हितकर नहीं होगा । मैंने विपुल से सारी बात बताई । विपुल ने ढाँढस बँधाते हुए कहा ''चिन्ता मत करो मैं भी इंदौर आ जाता हूँ फिर देखते हैं क्या करना है । तुम वहीं अस्पताल में मुन्ना के पास रहो ।''

पति का सम्बल पाकर मैं आत्मविभोर हो गई । शाम को चार बज गए । विपुल भी पुलिस इंस्पेक्टर के साथ वहाँ आ गए। उन्होंने मुन्ना के सिर पर हाथ फेरा । मुन्ना भी शायद इस आत्मीयता को पहचान रहा था । उसने आँखें खोलीं और मुझे पास पाकर मुस्कुरा उठा ।

थोड़ी देर बाद डॉक्टर आए और कुछ दवाइयाँ मुझे थमाते हुए उन्हें खिलाने का तरीका समझाते हुए कहा कि अब बच्चा पहले से बेहतर है । रातभर शायद ओस में पड़े रहने के कारण इसकी तबीयत खराब हो गई थी । अब आप इसे ले जा सकते हैं पर अभी कमज़ोरी है इसीलिये उसका विशेष ध्यान रखना होगा । विपुल ने उसे गोद में उठाया । इंस्पेक्टर ने भी उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि आप घबराइये नहीं । इसे अपने साथ ले जाइये । आप अपना पता लिखवा दीजिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर हम आपसे सम्पर्क साध सकें । विपुल ने अस्पताल के बिलों के भुगतान सम्बन्धी कार्रवाई की और कार में बैठ गए । आज मुन्ना के अचरज का ठिकाना नहीं था । सम्भवत: वह कार के अन्दर बैठकर पहली बार रफ्तार का आनन्द ले रहा था । भय और आशंका से वह मेरी गोद में सिमटा रहा ।

हमने मुन्ना को कानूनी तौर पर गोद ले लिया और उसे नया नाम दिया विशाल उपाध्याय । वह भी हमें मम्मी–पापा मानने लगा । हमारी बिटिया वैशाली भी अपने नए भाई को पाकर बेहद खुश है । कुछ ही दिनों में विशाल और घर के सभी लोग एक दूजे में समाहित हो गए । हे ईश्वर जिस प्रकार तूने मुन्ना को प्लेटफॉर्म की भीड़ भरी तनहाई से उबारकर एक स्नेह तथा अपनत्व भरा परिवार दिया उसी प्रकार प्लेटफॉर्म पर पड़े हर एक मुन्ने की तकदीर संवारकर उसे देश की तकदीर बना दे ।

कुदरत की करतूत

सांझ सुहानी है पर आजकल विरानी है ।
सूरज रोज की तरह जा चुका पश्चिम में ।
इन दिनों कुछ मनोरम नहीं कहानी है ।
जीवन में पहली बार देखा बसंत मौन है ।
कोई नहीं पूछता है कि आप क्या है कौन है ?
रुक सी गई है जिंदगी आदमी भयभीत है ।
महामारी के डर से दूर भी जाता अब मीत है ।
मैदानों में जमघट रहता था, मेला रहता खेल का था ।
आज कुत्तों ने दौड़ लगाई बस उन्ही में हेलमेल था ।
टिटहरियाँ टेंटें करती झपटती दौड़ते कुत्तों पर ।
दूर घरों की छतों से झांकता आदमी तरसा बलबूतों पर ।
ये कुदरत की करतूत निराली मत ले इंसा इससे पंगा ।
इतरारा अपने दम से, आज हालातों के आगे हुआ नंगा ।
सूने चौक चौबारे गलियां सूनी बाजार हवा अब खाता है ।
सब सोच ले इंसान भला कुदरत से क्या बाज आता है ?
खुद नियम तो बना लिए कभी प्रकृति की ओर देख लेता ।
सब कुछ छीनता रहा था इसका बदले में कुछ दे तो देता ।
हाथ से हाथ मिलाना दूर, नजरें मिलाने से कतराता है ।
विष भरी हवा से सहमा सा हर कोई आज घबराता है ।।

श्री सुगन लाल
टीजीटी हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय रेलवे गांधीधाम

आत्म नियंत्रण

सुना है चलते चलते रहो ठहर गये तो ठहर जाओगे ।
पर आज हाल बदल गये ठहरोगे तो ही चल पाओगे ।
फिरे जो चरे बंधा भूखों मरे, कोरोना ने सोच ही बदल दी ।
जो रुकेगा कल वही चलेगा, यह सब दुनिया संभल दी ।
मानव सभ्यता खतरे में है, खुद से आदमी डर गया है ।
चौक चौपालें सूनी पड़ गयी, मौत का मंजर भर गया है ।
हौसला रखो अच्छा होगा, क्योंकि घूरे के दिन बदलते हैं ।
समेट लो अपने आप को आओ, अब भी सब संभलते हैं ।
कुछ दिन जैसे तैसे कर लो बसर, सुख–सूरज चमकेगा ।
मिटेगा तांडव महामारी का, मन का बाग फिर महकेगा ।
रुक जाओ तनिक अपने घरों में, कल दुनिया देख पाओगे ।
वरना लाशें सड़ जायेंगी, खुद की मुक्ति को चिल्लाओगे ।
जिनको अपना मान रखा है, उनके लिए अपने बने रहना ।
नहीं तो अपने गैर होंगे, फिर गलत किसी को मत कहना ।
आदमी आदमियत खोकर, कहना किसी का न मान रहा ।
डंडे लाठी खाकर पीठ पर, अपनी असलियत बता रहा ।
संकट की बेला में आज, आओ हम कुछ सहयोग करें ।
करना कुछ और नहीं बस, कम से कम घरों में हम रुके रहें ।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

सुश्री राजेश्वरी
राजभाषा अधिकारी, यूको बैंक
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अपने राज्य की रक्षा के लिए अकेले युद्ध भूमि में अंग्रेजो के सामने कूद पड़ीं और उनका डटकर मुकाबला किया । जीत और वीरता में यही तो फर्क है कि जीत सिर्फ परास्त करने पर मिलती है और वीरता तो वह गुण होता है जो परिणाम के पहले और परिणाम के बाद तक चमकता रहता है । झांसी की रानी का नाम इतिहास में वीरता एवं शौर्य के लिए अमर है ।

वे कभी आपत्तियों से नहीं घबराई, कभी कोई प्रलोभन उन्हें अपने कर्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सका । अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्मविश्वास से भरी रहीं । महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में 19 नवम्बर 1835 को हुआ । इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था । माता भागीरथी बाई एक सुसंस्कृत, बुद्धिमान और धर्मनिष्ठ महिला थीं । वे 5 साल की थीं तब उनकी माँ की मृत्यु हो गयी । घर में मनु की देखभाल के लिये कोई नहीं था इसलिए पिता मनु को अपने साथ पेशवा बाजीराव द्वितीय के दरबार में ले जाने लगे । जहाँ चंचल और सुन्दर मनु को सब लोग प्यार से ''छबीली'' कहकर बुलाने लगे । मनु ने बचपन में ही शस्त्रों की शिक्षा ली थी ।

ओज और तेज की मल्लिका हर कला में प्रवीण थीं । जिस उम्र में सभी गुड्डे और गुड्डियों से खेलते थे उस उम्र में देश भक्ति में लीन मनु कृपाण और छुरियों से नाना संग युद्ध करती थीं । एक दिन हाथी पर बैठने की जिद ठानी, तब नाना ने कहा तेरे भाग्य में हाथी कहाँ ? मेरे भाग्य में एक नहीं सौ हाथी है नाना, कहकर मनु ने अपने भाग्य को भी चुनौती दे डाली थी ।

सन् 1842 में उनका विवाह झाँसी के मराठा शासित राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ और वे झाँसी की रानी बनीं । विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया । महारानी बनने के पश्चात लक्ष्मीबाई को रानियों के तौर-तरीके सीखने में समय लगा । किसी भी दु:खियारे को देखकर रानी सारे तौर-तरीके भूलकर उनकी सहायता के लिए पहुँच जाती थीं, इसके कारण गंगाधर राव लक्ष्मीबाई से नाराज रहते थे । लक्ष्मीबाई को महाराज की अंग्रेजों के साथ दोस्ती अच्छी नहीं लगती थी, क्योंकि अंग्रेज महाराज के सामने झाँसी के हित एवं प्रगति की बातें करते थे और पीठ पीछे झाँसी की प्रजा को मजबूर और लाचार बनाकर हुकूमत चलाते थे । झाँसी की प्रजा अंग्रेजों के डर से उनकी सच्चाई महाराज को कहने की हिम्मत भी नहीं कर पाती थी । लक्ष्मीबाई ने अपनी प्रजा की समस्याओं को दूर करके उनको विश्वास दिलाया कि उनकी हर समस्या में वह उनके साथ हैं । प्रजा के स्वाभिमान को जगाया । सबको समझाया कि, ''हमारी संस्कृति में पहले शांति और फिर क्रांति को जगह दी गई है । अंग्रेज लड़ रहे हैं ताकि हम पर राज कर सकें, हम लड़ रहे हैं ताकि खुद पर नाज़ कर सकें । जरुरी नहीं है जिंदगी में सब कुछ सीखना, सिर्फ एक बात सीख लो सब कुछ आ जाएगा, और वो है मातृभूमि से नि:स्वार्थ प्रेम ।'' रानी ने सभी महिलाओं को शस्त्र एवं हथियारों का प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया, क्योंकि हर परिवार की महिला सशक्त होगी तो परिवार मजबूत बनेगा ।

''दिन प्रति दिन हर हर महादेव की चिंगारी को हमें पूरे देश में जगाना है । आज़ादी तो एक दिन मिलनी ही है, मगर उससे पहले हमें हमारे अपनों को जगाना है ।''

अंग्रेजों ने झाँसी की प्रजा पर अधिक कर लगाया और कर का भुगतान नहीं करने पर पशुओं को जप्त कर लिया जाएगा, यह ऐलान किया । महाराज गंगाधर राव के इनकार करने पर अंग्रेजों ने झाँसी को दी जा रही सुरक्षा हटा लेने की धमकी दी। इसलिए इसे स्वीकार करते हुए महाराज ने कर को झाँसी में लागू कर दिया । लक्ष्मीबाई ने बहुत विरोध किया, लेकिन महाराज

इसका विरोध न कर पाए, तब रानी ने पशुओं को बचाने के लिए झाँसी के खजाने से अंग्रेजों के कर की भरपाई करके पशुओं को बचा लिया, यहाँ तक कि उन्होंने अपने गहने भी दे दिए। झांसी की सुरक्षा के लिए झाँसी के लोगों को ही प्रशिक्षित करने लगीं। यह जानकार अंग्रेजों ने कर को समाप्त कर दिया, क्योंकि वह जान चुके थे कि वह अपनी बातों व धमकियों से महाराज को मजबूर कर सकते हैं, लेकिन लक्ष्मीबाई को नहीं। लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के हर प्रयास से झाँसी व झाँसी की प्रजा को बचाती रहीं एवं अंग्रेजों का सामना करने के लिए प्रजा–जनों को तैयार करती रहीं।

रानी ने विधवाओं को जीवन जीने का अधिकार दिलवाया, सभी त्यौहार विधवाओं के संग भी मनाए। रानी ने अपनी सखी मंजरी, जिसके पति को अंग्रेजों ने मार डाला था। उसका पुन: विवाह क्रांतिकारी भीमा से करवाया, इस अवसर पर एक अंग्रेज ने पुन: भीमा को गोली मारकर मंजरी के साथ गलत व्यवहार करने का प्रयास किया, तब मंजरी भागकर रानी लक्ष्मीबाई के पास पहुँची। यह कृत्य को जानकार रानी ने अंग्रेज को सभी प्रजाजनों के सामने जिंदा जला डाला। इसका प्रतिशोध लेने जब कैप्टन रॉस आया, तब रानी ने चिल्लाते हुए कहा, ''यदि ऐसा किसी ने भी किया तो काट कर रख दूँगी।'' तब से कैप्टन रॉस की नींद गायब हो गई।

उसे सपने में भी रानी डराने लगी थी। वह स्वयं की चिता जलते हुए देख रहा था। एक दिन यह सपना पूरा भी होता है, रानी के हाथों ही उसकी मृत्यु होती है।

भारत में प्रथम रेल की शुरुआत हुई, तब अंग्रेज रेल के माध्यम से भारतीय लोगों को अपने देश में बंधुआ मजदूर बनाकर ले जा रहे थे, जिसकी जानकारी मिलते ही रानी ने गंगाधर राव को इसकी सूचना दी, लेकिन जब रेल के डिब्बे खोलकर देखा गया तो डिब्बे में कोई नहीं मिला, क्योकि अंग्रेजों को इसकी भनक लगते ही सभी मजदूरों को रेल से उतार दिया गया था और जैसे ही महाराज और महारानी वहाँ से गए कि तुरंत सभी को वापस रेल के डिब्बो में जानवरों की भाँति मार मारकर भरा गया। रेल चलते ही रक्त की बूँदे गिरती हुई रानी ने देख ली, तभी रानी अपना घोड़ा लेकर रेल को रोकने के लिए निकल पड़ीं। इस कार्य में तात्या टोपे एवं गौस खान ने उनका साथ दिया। गौस खान ने रेल की पटरियों को खाईं की तरह मोड़ दिया और तात्या टोपे एवं रानी ने मिलकर चलती रेल के डिब्बों को इंजन से अलग कर दिया। यदि समय पर रेल का इंजन रेल के डिब्बों से अलग नहीं होता तो मजदूरों के साथ साथ रानी और तत्या टोपे की जान भी जा सकती थी। गुस्से में जब महाराज ने रानी को डांटा तब उन्होंने कहा, ''ये राजमहल, ये सिंहासन मुझे रानी नहीं बनाते हैं, झाँसी के लोगों का प्यार, उनका विश्वास मुझे रानी बनाता है।''

इस घटना के पश्चात ही महाराज गंगाधर राव, रानी लक्ष्मीबाई पर पूर्ण भरोसा करने लगे। उसी दिन गंगाधर राव ने महसूस किया कि ''मैने झाँसी को उत्त्तराधिकारी देने हेतु लक्ष्मीबाई से विवाह किया था, लेकिन लक्ष्मीबाई स्वयं ही झाँसी की उत्तराधिकारी बनने योग्य हैं, जब तक रानी लक्ष्मीबाई जीवित हैं, तब तक झाँसी सुरक्षित है।''

इसके पश्चात महाराज गंगाधर राव लक्ष्मीबाई के सच्चे मित्र, मार्गदर्शक एवं जीवनसाथी बने। महाराज और रानी के बढ़ते प्रेम को देखकर राजमहल में ही साजिशें होने लगीं। कुछ परिवार के लोग स्वयं ही झाँसी पर राज करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने महाराज और रानी के खिलाफ कई षडयंत्र रचे, जिसमें अंग्रेजों की चापलूसी करके झाँसी को परेशानी में डालते रहे, यहाँ तक की महाराज और रानी को मारने की भी साजिश की गई। रानी लक्ष्मीबाई ने एक के बाद एक करके सभी का पर्दाफाश किया।

अंग्रेजों के लगातार बुरे बर्ताव के कारण भारतीय सिपाहियों ने अंग्रेज स्त्रियों एवं बच्चों का कत्ल कर दिया। तब लक्ष्मीबाई ने सिपाहियों को गुस्से में बहुत सुनाया, ''आप सब इन्हीं कर्मों से स्वराज्य और बादशाही स्थापित करोगे ? तुमको लाज आनी चाहिए। तुम लोगों ने घोर दुष्कर्म किया है। क्या तुम समझते हो कि संसार से सब नियम उठ गए ? ऊंचे आदर्श की प्राप्ति के लिए नीच उपाय का प्रयोग, महायज्ञ की साधना के लिए गलत अनुष्ठान का उपयोग, शांत निंद्रा के लिए नशे को काम में लाना, क्या कभी भी उचित कहा जा सकता है ?

सन 1851 में रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया, लेकिन चार महीने की उम्र में ही उसकी मृत्यु हो गयी। सन् 1853 में राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर उन्हें दत्तक पुत्र लेने की सलाह दी गयी।

पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवंबर 1853 को राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया। इसके बाद शुरु हुआ रानी

लक्ष्मीबाई के जीवन में संघर्ष, लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तकपुत्र दामोदर राव की गोद अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। पति की मृत्यु के शोक में डूबी हुई रानी ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया और उन्हें वर्ष १८५४ में अंग्रेजों को साफ कह दिया ''मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी'', उन्होंने विद्रोह कर दिया। ''मैं रानी लक्ष्मीबाई प्रतिज्ञा करती हूँ, जब तक मेरे शरीर में रक्त की आखिरी बूंद है, मैं झाँसी की रक्षा करुंगी...।''

झाँसी 1857 के संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र बन गया जहाँ हिंसा भड़क उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की सुरक्षा को सुदृढ करना शुरु कर दिया और एक स्वयंसेवक सेना का गठन प्रारंभ किया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती की गई। साधारण जनता ने भी इस संग्राम में सहयोग दिया। झलकारी बाई जो लक्ष्मीबाई की हमशक्ल थी को उसने अपनी सेना में प्रमुख स्थान दिया। 1857 के सितंबर तथा अक्टूबर महीनों में पड़ोसी राज्य ओरछा तथा दतिया के राजाओं ने झाँसी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने सफलतापूर्वक इसे विफल कर दिया। 1858 के जनवरी माह में ब्रितानी सेना ने झाँसी की ओर बढ़ना शुरु कर दिया और मार्च के महीने में शहर को घेर लिया। हफ्तों की लड़ाई के बाद ब्रितानी सेना ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया, किन्तु रानी दामोदर राव के साथ अंग्रेजों से बच कर भाग निकलने में सफल हो गयीं। रानी, झाँसी से भाग कर कालपी पहुँची और तात्या टोपे से मिलीं। तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया। बाजीराव प्रथम के वंशज अली बहादुर द्वितीय ने भी रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया और रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें राखी भेजी थी, इसलिए वह भी इस युद्ध में उनके साथ शामिल हुए।

रानी लक्ष्मीबाई ने वीरतापूर्वक झाँसी की सुरक्षा की और अपनी छोटी-सी सशस्त्र सेना से अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। सिर्फ कुछ सैनिकों से घिरी और हथियारों से लैस एक महिला अपने सैनिकों में कुछ जान फूंकने की कोशिश कर रही थीं। बार-बार वो इशारों और तेज आवाज से हार रहे सैनिकों का मनोबल बढ़ाने का प्रयास करती थीं। रानी ने खुलेरुप से शत्रु का सामना किया और युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया। वे अकेले ही अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो, अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं, उन्होंने घोड़े की रस्सी अपने दाँतों से दबाई हुई थी, वो दोनों हाथों से तलवार चला रही थीं और एक साथ दोनों तरफ वार कर रही थीं।

रानी का घोड़ा बुरी तरह से घायल हो गया और तभी अंग्रेजों ने रानी पर वार किया और फिर भी रानी लड़ती रहीं। जब सिर से रक्त की धारा बहने लगी, तब रानी को पता चल चुका था कि अब अधिक समय नहीं है। वह दामोदर को लेकर सीधे एक मंदिर पहुंचीं और कहा, ''मैं दामोदर को आपकी देखरेख में छोड़ती हूँ, इसे छावनी ले जाओ, दौड़ो। रानी की साँसे तेजी से चलने लगी थीं। रानी ने कहा, ''अंग्रेजों को मेरा शरीर नहीं मिलना चाहिए '' ये कहते ही उनका सिर एक ओर लुढ़क गया। रानी के पार्थिव देह को झोपड़ी में ले जाया गया, और झोपड़ी को जलाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। 18 जून 1858 को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुईं।

मै और मेरे अल्फाज़

श्री सुगन लाल
टीजीटी हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय रेलवे गांधीधाम

किताबें तो बहुत सी पढ ली है मन की बातें पढेगा कौन
सारी बातें सबको वाकिफ है फिर भी क्यों रहते है मौन ?

इस मोबाइल के डिब्बे में त्योहारों की धूम सिमट गई क्यों
चौक चौबारे खाली पड़ गये सुबह में तारे छिप जाते ज्यों।

चौकी पर वो जाजम सजती पर आज पाखावा वहाँ बना
झीनी रेत में चिड़िया फुटकती यह पोस्ट में सिमट घना।

व्हाटसेप ने महफिल छीनी, राम राम हैलो हाय ले गया
भरे कुटुंब में आज आदमी खुद ही को तनहा कर गया।

डरने लगा आदमी आदमी की जात से जानवर बदनाम है
तन के उजले मन के काले, बन गया आदमी अब हैवान है।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा छोरा छोरी संग संग थिरकते है
शर्म ओ हया ताक पर रख माँ बाप सुकून से निरखते है।

बहुत चला गया थोड़ा रह गया सुंदर युग फिर रचाना है
आधुनिकता की अँधी दौड़ में चीर द्रोपदी का बचाना है।

सूर्य नमस्कार

सुश्री राजेश्वरी
राजभाषा अधिकारी, यूको बैंक
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

सूर्य नमस्कार के अभ्यास से शरीर, मन एवं आत्मा सबल होते हैं । पृथ्वी पर सूर्य के बिना जीवन संभव नहीं है । सूर्य नमस्कार, सूर्य के प्रति सम्मान व आभार प्रकट करने की एक प्राचीन विधि है, जो कि पृथ्वी पर जीवन के सभी रूपों का स्त्रोत है । सूर्य नमस्कार 12 आसनों से मिलकर बना है । इसलिए रोजाना सिर्फ सूर्य नमस्कार करना ही आपके पूरे शरीर को ऊर्जावान बनाता है और रोगों से भी दूर रखता है ।

सूर्य नमस्कार करने के लाभ :

- पेट की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और उससे पाचन शक्ति बढ़ती है ।
- शरीर के ज्यादा वजन को कम करता है ।
- दिमाग को शांत करता है और आलस्य को दूर भगाता है ।
- इस व्यायाम को करने से शरीर में खून का प्रवाह तेज हो जाता है जो ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में सहायक होता है ।
- यह योगा अभ्यास आपके बालों को असमय सफेद होने, झड़ने व रुसी से बचाता है ।
- शरीर में ताजगी भरता है और मन को एकाग्र करने में सहायता करता है ।
- अगर आपको गुस्सा बहुत जल्दी आता है तो यह योग आपको इसे कंट्रोल में रखने की शक्ति भी प्रदान करता है ।
- जोड़ो को सुचारु रखने में भी सहायक है ।
- यह योग करने से शरीर में लचीलापन बना रहता है, जिससे पीठ और पैरों के दर्द में आराम मिलता है ।
- शरीर को प्राकृतिक रुप से विटामिन डी मिलता है जो हड्डियों को मजबूत करने और आंखो की रोशनी बढ़ाने में फायदेमंद होता है ।
- यह योग त्वचा के रोग खत्म करने में भी मददगार साबित होता है ।

माँ

श्री हनुमान वर्मा
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय रेलवे गांधीधाम

माँ......
.....अमूर्त को मूर्त रूप देती ।
अजीव को जीवन देती...माँ ।
माँ...सहेजती समय को अपने गर्भ में,
इन समय के हर क्षण को
...अक्षुण बना देती...माँ ।
माँ...सींचती...जीवन को
...ममतामयी शीतल जल से
सुरक्षित बनाती जीवन को...
...हर संकट, विकट पल विपल से ।

अपने अंश को आंशिक से...
....पूर्ण बना देती...माँ ।
नश्वर, विषम जीवन को...
...श्रेयष्कर, सम्पूर्ण बना देती...माँ ।
माँ...अनुपम अद्‌भुत शक्तियों से युक्त
...अयुक्त को उपयुक्त दिशा देती...माँ ।
माँ...प्रथम गुरु ।
अमूल्य अनमोल जीवन को...
मूल्यों सहित जीना...
...सिखा देती...माँ ।

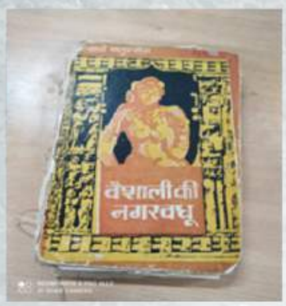

वैशाली की नगरवधू
संक्षिप्त परिचय

शिवानंद मिश्र
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय इफ़को, गांधीधाम

ग्रंथपरक ब्यौरा :

शीर्षक : वैशाली की नगरवधू , **लेखक :** आचार्य चतुरसेन, **प्रकाशन विवरण :** दिल्ली , राजपाल एण्ड संस 1990

पृष्ठ संख्या : 448, **आकार :** 21 सेमी, **जिल्द :** सजिल्द, **मूल्य :** 80 रुपये, **अधिग्रहण संख्या :** 1354

लेखक परिचय :

आचार्य चतुरसेन शास्त्री (26 अगस्त 1891-2 फरवी 1960) हिन्दी भाषा के एक महान उपन्यासकार थे । इनका अधिकतर लेखन ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है । इनकी प्रमुख कृतियां गोली, सोमनाथ, वयं रक्षामः और वैशाली की नगरवधू इत्यादि हैं । 'आभा' इनकी पहली रचना थी । आचार्य चतुरसेन शास्त्री का जन्म 26 अगस्त 1891 ई. को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के चांदोख में हुआ था । उनके पिता का नाम केवलराम ठाकुर तथा माता का नाम नन्हीं देवी था । उनका मूल नाम चतुर्भुज था । उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव के पास स्थित सिकन्दराबाद के एक स्कूल में समाप्त की । फिर उन्होंने राजस्थान के जयपुर के संस्कृत कॉलेज में प्रवेश किया । यहाँ से उन्होंने सन 1915 में आयुर्वेद में आयुर्वेदाचार्य तथा संस्कृत में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की । उन्होंने आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य की उपाधि भी प्राप्त की । अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वे आयुर्वेदिक चिकित्सक के रुप में कार्य करने के लिए दिल्ली आ गए । उन्होंने दिल्ली में अपनी खुद की आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी खोली, लेकिन यह अच्छी तरह से नहीं चला और इसे बन्द करना पड़ा । उन्होंने लिखना शुरु किया और जल्द ही एक कहानीकार और उपन्यासकार के रुप में प्रसिद्ध हो गए । ये बचपन से ही आर्य समाज से प्रभावित थे और इन्होंने अनाज मंडी शाहदरा का घर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड को दान कर दिया था, जिसमें आजकल विशाल लाइब्रेरी है । उनकी मृत्यु 2 फरवरी 1960 को हुई ।

प्रमुख कृतियाँ : हृदय की प्यास, वयं रक्षामः, वैशाली की नगरवधू, सोमनाथ, आलमगीर, सोना और खून, गोली, अपराजिता, धर्मपुत्र, नरमेध आदि उपन्यास राजसिंह, मेघनाथ, छत्रसाल, गांधारी, श्रीराम आदि नाटक, साढ़े चार सौ कहानियाँ, यादों की परछाई–आत्मकथा

इस उपन्यास के प्रति उपन्यासकार के स्वयं के विचार - ....इतना मूल्य चुकाकर निरंतर चालीस वर्षों की अर्जित अपनी सम्पूर्ण साहित्य–सम्पदा को मैं आज प्रसन्नता से रद्द करता हूँ और यह घोषणा करता हूँ – कि आज मैं अपनी यह पहली कृति विनयांजलि सहित आपको भेंट कर रहा हूँ ।

प्रमुख पात्र : महानामन, सम्राट बिंबसार, महामात्य वर्षकार, सोमप्रभ, कुण्डनी, अम्बपाली, कोशांबीपति महाराज उदयन, कोसल नरेश प्रसेनजित, कलिंगसेना, भगवान वादरायण, सेनापति भद्रिक, जयराज, स्वर्णबिदूडभ, बन्धुल, राजमहिषी मल्लिका देवी, गौतम बुद्ध, भगवान महावीर, स्वर्णसेन, दस्यु बलभद्र, नन्दन साहू, सोमिल, हरिकेशीबल, गणपति सुनंद

शब्द सौष्ठव एवं भाषा सौष्ठव : पुस्तक से ही प्रस्तुत हैं कुछ पक्तियाँ :–

''फिर उसका ध्यान अपने अप्रतिम अंग – सौष्ठव पर जाता, वह अपने अद्‌भुत रुप को पुष्करिणी के स्वच्छ जल में निहार कर कभी–कभी बहुत प्रसन्न हो जाती । उस समय वे सब वासनाएं जिनकी उसे चाट पड़ गई थी, एक–एक कर उसके निकट आकर उसके अंग–प्रत्यंग में पैठ जाती थी और वह मंद मुस्कान के साथ कहती–कोई हानि नहीं, इसी रुप की ज्वाला में, मैं विश्व को भस्म करुंगी ।''.. पृष्ठ संख्या 69

''वशिष्ठ – 'तो मैं छ: कन्याएं घोषित करता हूँ – 1. जो अविवाहित और अक्षत है, 2. जो अविवाहिता है और क्षत है, 3. जो विवाहिता है और अक्षत है, 4. साधारण स्त्री, 5. विशिष्ट स्त्री, 6. मुक्तभोगिनी' '' – पृष्ठ संख्या 201

''उसने चीत्कार करके कहा – 'अरे ओ निर्मम, कहां चले गए तुम, आओ, गर्विणी अम्बपाली का समस्त दर्प मर चुका है, वह तुम्हारी भिखारिणी है, तुम्हारे पौरुष की भिखारिणी ।' उसने उन्मादग्रस्त – सी होकर दोनों हाथ फैला दिए ।'' – पृष्ठ संख्या 293

''इस भुवन – मोहिनी की वह छटा आगंतुक के हृदय को छेदकर पार हो गई । उसके घनश्याम कुंचित कुंतल केश उसके उज्जवल और स्निग्ध कन्धों पर लहरा रहे थे । स्फटिक के समान चिकने मस्तक पर मोतियों का गूंथा हुआ चंद्रभूषण अपूर्व शोभा दिखा रहा था । उसकी काली और कंटीली आँखें, तोते के समान नुकीली नाक, बिम्बाफल जैसे दोनों ओष्ठ और अनारदाने के समान उज्जवल दांत, गौर और गोल चिबुक बिना ही श्रृंगार के अनुराग और आनन्द बिखेर रहे थे ।'' – पृष्ठ संख्या 410

''एक ऐसा सावन आता था''

श्रीमती रानी कुकसाल
वरि. लिपिक, विद्युत प्रभाग
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

चलो सखी फिर सपने सजा लो कागज वाली नांव पे,
यौवन को फिर लौटा लाएं बाबुल वाले गाँव में,
खेतों की हरियाली ओढ़ें कभी ओढ़ लें धाम रे,
करें ठिठोली कीचड़ वाली धूम मचा लें गाँव में,
चुहल करें कभी करें शिकायत अमराई की छाँव में,
चक्की की कु कु कु धुन सुन थिरकन दे दें पाँव में,
चलो सखी फिर अरमानों संग खेत में बने मचान पे,
इमली चूसें बीज उछालें उंचे आसमान में,
चलो बताएं कैसा सावन आता था तब गाँव में ।

मदमस्त हवा का आंचल इस धरती पर लहराता था,
तब उमड़–घुमड़ के गरज के बादल बिजली से टकराता था,
कुछ ऐसा सावन आता था कुछ ऐसा सावन आता था ।

कोयल जब गीत सुनाती थी मन पुलक पुलक तब गाता था,
निंबिया की झुकी हुई डाली पर जब झूला सज जाता था,
सावन में साजन से बिछोह कर बिटिया मैके आती थीं,
कजरी की धुन सज जाती थी अंगना गदगद हो जाता था,
इक ऐसा सावन आता था हाँ ऐसा सावन आता था ।

लीची कटहल अंबवा महुआ चौपालों पर सज जाता था,
चुड़िहारिन चूड़ी पहनाती पैरों में आलता रंग जाता था,
कीचड़ में सनी उन्माद भरी सखियाँ मेले में जाती थीं,
तब बादल बरबस बरस बरस अल्हड़ता संग हर्षाता था,
इक ऐसा सावन आता था हाँ ऐसा सावन आता था ।

बिजुरी सी बाला का मुखड़ा बिजुरी से चौंधिया जाता था,
तब मादक बदरा गोरी के कुंतल में उलझता जाता था,
लहरा के हवा में जब आंचल गोरी का बदन सहलाता था,
तब बन बौछार बावरा बादल बाला को बहलाता था,
इक ऐसा सावन आता था हाँ ऐसा सावन आता था ।

कागज की नौका में कलरव बरखा संग सैर को जाता था,
गैया बछड़े औ पपीहे संग सावन भी प्यास बुझाता था,
साजन की याद सताती थी तब अंखियाँ नीर बहाती थीं,
तब नीर छिपाने बाबुल से बदरा बरखा कर जाता था,
इक ऐसा सावन आता था हाँ ऐसा सावन आता था ।

जिम्मेदारी

सुश्री दीक्षा राजपुरोहित
सहायक यातायात प्रबंधक
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

आंसू छलक गए उस क्षण,
जब माँ ने कहा ''शुक्रिया बेटा मेरी जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए''
फिर सोचा क्यूँ न आज मैं भी शुक्रिया कहकर,
सारा हिसाब पूरा कर दूँ,
बस समझ ये नहीं आ रहा था कि,
किस किस बात के लिए तुझे शुक्रिया कहूं ।

ये जानते हुए भी कि मेरे आने से तेरी ज़िम्मेदारियाँ और बढ़ जाएंगी,
फिर भी मुझे दुनिया में लाने के लिए ।

नौ महीने अपने गर्भ में रखकर,
मौत से लड़के मुझे इस दुनिया में लाने के लिए ।

अपनी रातों की नींद खो कर,
मुझे घंटो थपथपा के सुलाने के लिए ।

मेरा ज़रा सा सिसकते ही,
एक पल में गहरी नींद से उठ जाने के लिए ।

मेरे एक आँसू के निकलते ही,
अपनी सारी दुनिया भूल के मुझे अपनी गोद में उठाने के लिए ।

मेरे लड़खड़ाते कदमों पे,
मेरा हाथ थाम के 'मैं गिरूँगी नहीं' ये यकीन दिलाने के लिए ।

मेरी ज़िन्दगी सँवर जाए इसलिए,
सारी दुनिया से लड़कर मुझे पढ़ाने लिखाने के लिए ।

ज़िन्दगी के हर पड़ाव पे,
मेरी जरूरतों को समझ के मेरा साथ निभाने के लिए ।

मुझमें और भाई में फर्क न करके,
मुझे उसके समान दर्जा दिलाने के लिए ।

सर उठाकर ज़िन्दगी जी सकूँ,
मुझे इतना काबिल बनाने के लिए ।

हर मुश्किल परिस्थिति का सामना कर सकूँ,
मुझे खुद पे इतना भरोसा दिलाने के लिए ।

तो अब मैं ये कैसे भूल जाऊं कि,
मेरा होना ही तुझसे है ।

शायद इस जन्म में तो तेरे ये कर्ज न उतार पाऊँ,
चाहे ताउम्र तेरी हर ज़िम्मेदारी में तेरा साथ निभाऊँ,
बस इतनी ही तम्मन्ना है दिल से कि,
हर जन्म में...मैं तेरा ही अंश बन कर आऊँ ।

हर जन्म में...मैं तेरी ज़िन्दगी का एक छोटा सा हिस्सा बन पाऊँ,
हर जन्म में...मैं तेरी ही बेटी कहलाऊँ...,
मैं तेरी ही बेटी कहलाऊँ ।।

काश !

कितनी अलग होती जिन्दगी,
अगर तू साथ होता ।
कितना सुकून होता,
अगर तू हर साकार होते सपने देखने को पास होता ।
चुनौतियों का सफर थोड़ा आसान होता,
अगर तेरे अनुभवों का सहारा मेरे पास होता ।
डर का दूर दूर तक नामों निशान नहीं होता,
अगर सिर पर मेरे तेरे आशीर्वाद का हाथ होता ।
खुशियों का रंग भी कुछ खास होता,
अगर तेरा मुस्कुराता चेहरा आसपास होता ।
हर खुशी के मौके पर आंखों में आसुओं का सैलाब नहीं होता,
अगर तेरी कमी का बार बार एहसास नहीं होता ।
अधूरे सपने के दर्द से मेरा वास्ता नहीं हुआ होता,
अगर बीच राह में तू यूं छोड़ कर ना गया होता ।

काश...वो उपर वाला,
मुझे कुछ और चंद लम्हें तेरे साथ दे देता,
काश...ये काश सच होता ।
काश...ये काश सच होता ।।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की ऑनलाइन छमाही समीक्षा बैठक (दि. 31-08-2020)

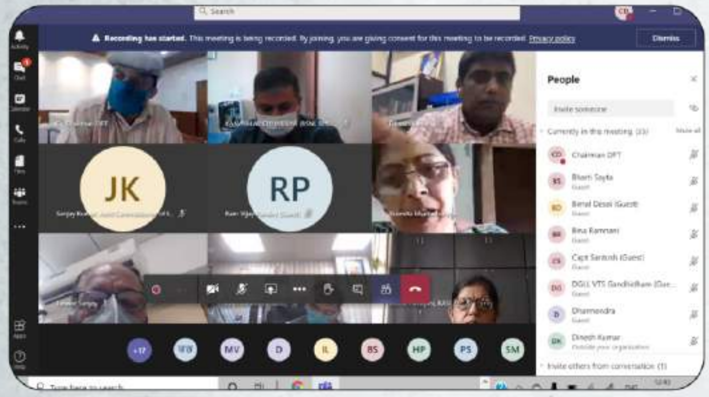

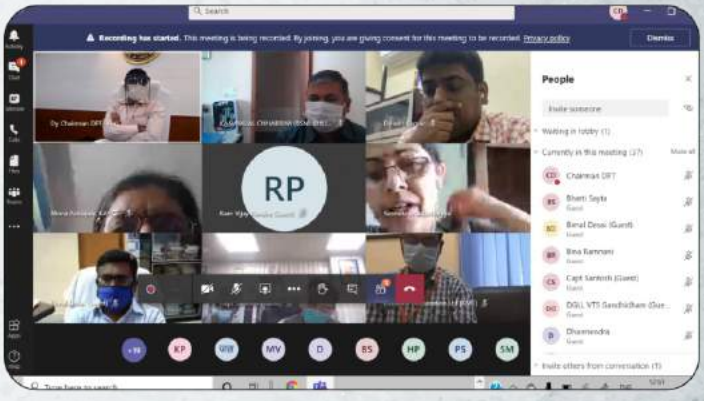

बैठक के दौरान ''कंडला नराकास संवाहिका'' के द्वितीय अंक का विमोचन

''कंडला नराकास संवाहिका'' के द्वितीय अंक की एक झलक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम के विद्यमान सदस्य

- गोदी सुरक्षा निरीक्षणालय
- वीटीएस निदेशालय
  दीप स्तंभ और दीपपोत महानिदेशालय
- सीमाशुल्क आयुक्त का कार्यालय
- नमक अधीक्षक का कार्यालय
- पोतपत्तन स्वास्थ्य संगठन
- विकास आयुक्त का कार्यालय
- संयुक्त आयकर आयुक्त का कार्यालय
- मुख्य डाकघर गांधीधाम
- भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण नागर विमानक्षेत्र कंडला
- क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय पश्चिम रेलवे
- केन्द्रीय विद्यालय इफको/रेलवे
- केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल
- समुद्री वाणिज्य विभाग, पोत परिवहन मंत्रालय,
- भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड
- दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
- इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड
- हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड
- भारत संचार निगम लिमिटेड
- केंद्रीय भंडारण निगम
- गेल (इंडिया) लिमिटेड
- भारतीय खाद्य निगम
- पॉवरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
- भारतीय जीवन बीमा निगम
- न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी)
- स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
- बैंक ऑफ बड़ौदा
- बैंक ऑफ़ इंडिया
- यूको बैंक
- इंडियन ओवरसीज़ बैंक
- केनरा बैंक
- यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
- सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
- बैंक ऑफ महाराष्ट्र
- पंजाब नेशनल बैंक
- पंजाब एंड सिंध बैंक